A Collection of Creative Paintings & Hindi Poems

सावन के संग भीगे शब्द रंग

प्रो० डॉ० शशिकांत 'सावन'

MPASVO
International Publication

MPASVO
International Publication
मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था ,बी 32/16 ए -फ्लैट 2/1 गोपाल कुञ्ज नरिया,लंका, वाराणसी

मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था की स्थापना का उ-ेश्य अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकों, अप्रकाशित शोधों, मौलिक कृतियों, कहानियों, उपन्यासों, पाठ्यपुस्तकों, पाण्डुलिपियों का प्रकाशन, साथ ही शोध के नवीन बिन्दुओं का अध्ययन करना है। मनीषा प्रकाशन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका "आन्वीक्षिकी के साथ ही ए.जे.एम.ए.एम.एस एवं सार्क अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका" का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

कार्यालय : वाराणसी, जौनपुर, इलाहाबाद, लखनऊ, महाराष्ट्र
MPASVO अर्थात् मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था। यह प्रकाशन एवं शोध के लिए स्थापित पंजीकृत, भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्ववित्तपोषित अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है। इसकी पंजीकरण पत्रावली संख्या v-34654,रजि. 533/2007-2008 है।

© मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था
© प्रो.डॉ. शशिकांत "सावन"
प्रथम संस्करण 2016, मूल्य : 500/-मात्र

सर्वाधिकार सुरक्षित
इस पुस्तक के अन्तर्गत सभी अधिकार लेखक के अधीन हैं। इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी रूप में प्रयोग करना, फोटोकॉपी करना अथवा किसी भी जानकारी को बिना सन्दर्भ दिये प्रयोग करना दण्डनीय होगा। प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत किया गया शोध लेखक का व्यक्तिगत अध्ययन एवं दृष्टिकोण है, प्रकाशक प्रस्तुत पुस्तक के किसी भी तथ्य अथवा संवाद के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार नहीं है।

International Standard Book Number
ISBN-13 : 978-93-82061-37-3
ISBN-10 : 9382061373

टंकण : एडोब पेजमेकर,कुण्डली फांट 14 /16.8
पुस्तक संयोजन : महेश्वर शुक्ल

भारत में मुद्रण
मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था
बी 32/16 ए -फ्लैट 2/1 गोपाल कुञ्ज नरिया,लंका, वाराणसी
सम्पर्क : मो. 9935784387

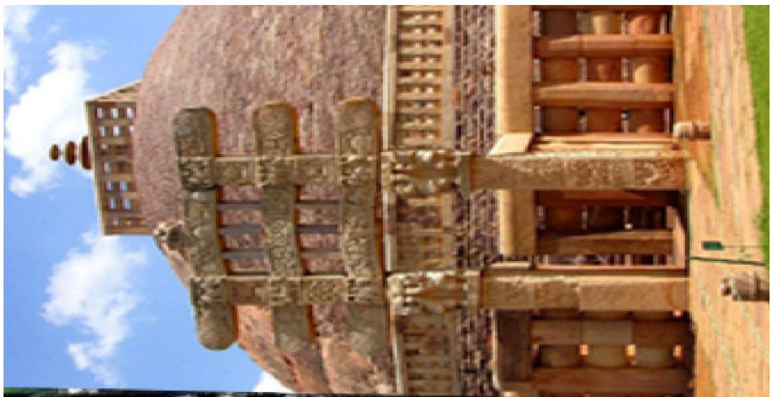

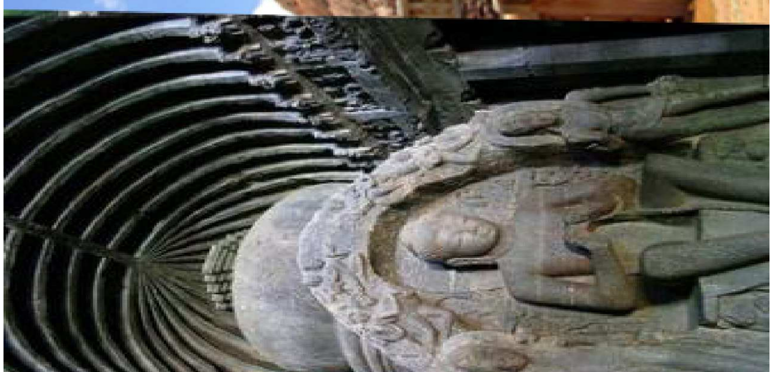

समर्पण*

''विश्वविख्यात अजंता–एलोरा
तथा सारनाथ–साँची की कालजयी
शिल्प एवं चित्रकला गढ़नेवाले,
उन अनामिक, अनगिनत
आदिम सृजनहारों की अद्वितीय
कला साधना को..........''
'आशय और सावन'

भूमिका
शब्द और रंगों की दुनिया के झरोखे से...

'सावन के संग भीगे शब्द रंग' आप तक पहुँचाते हुए, मैं असिम आनंद और आस्थाभिव्यक्ति की अनुभूति कर रहा हूँ। विगत पच्चीस वर्षो से साहित्य कला संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय रहने की यह भावभिनी फलश्रुति मैं मानता हूँ। लोकसाहित्य एवं संस्कृति की विरासत मुझे दादा-दादी से मिली। कलाकार-अध्यापक पिता से साहित्य तथा कला के जन्मजात संस्कार मिले। रंगों की लुभावनी दुनिया में एक बालक तल्लीन होकर खुद के साथ भौतिक संसार को भूलता गया। चित्रकारिता (पेंटिंग्स) की ऐसी लगन लगी कि देवालय, पाठशालाएँ, दुकाने तथा स्मशानों में चित्रसाधना जारी रही। निर्माण किए पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक तथा काल्पनिक चित्रों की झाकियॉ आज उभरकर आती है। इन सैकडों पेंटिंग्स से चुनिंदा पचास कलाकृतियॉ मेरी पचास हिंदी कविताओं संग आप के सन्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा ही नही अपितु दृढ़ विश्वास है कि ये आप को लुभाकर, जीवन के नए आयामों के संदर्भ में चिंतनरत बनाएगी।

अरस्तु, सुकरात, प्लेटो, लोंजाईस, क्रोचे, लिओनार्दो-द- व्हिन्ची, वैनगॉग, रेम्बॉट, माईकेल एंजेलो तथा पाब्लो पिकासो जैसे पाश्चात्य विद्‌वान कलाकारों तथा दार्शनिकों ने कला जीवन का अभिन्न हिस्सा मानते हूए, आनंद और सौंदर्यभिव्यक्ति के केंद्रीय रूप में कला को स्थान दिया है। साहित्य भी इसी श्रृंखला की कड़ी है। भारतीय कलाविदो तथा दार्शनिकों ने जीवन के लिए कला, जीवन के अनाकलनिय संदर्भ एवं गुत्थियों को उजागर करने का प्रभावी माध्यम के रूप में कला-साहित्य का स्वीकार किया। महात्मा बुद्ध, ज्योतिबा फुले, रवींद्रनाथ टैगोर, डॉ0 बाबासाहब अम्बेडकर, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, सुब्रह्मण्यम भारती, निराला, अज्ञेय, बौद्ध महापंडित राहूल सांकृत्यायन, धर्मानंद कोसंबी, शांतिस्वरूप बौद्ध, पाणिनि, क्षेमेंद्र, जेमिनि, कुंतक तथा भरतमुनि जैसे नामों की श्रृंखला भारतीय कला-साहित्य की बुनियाद है।

'सावन के संग भीगे शब्द रंग' में प्रेम और प्रकृति के विविध आयामों को उजागर कराते हुए प्रकृतिप्रेमी तथा मानवतावादी बनने का आवाहन है। विश्वदीप-वसुंधरा, सावन-संध्या, अभिलाष -अरूणा, वरूण-वर्षा तथा चॉद-चकोरी शीर्षकांतर्गत सभी कविताएँ एवं सर्जनात्मक चित्रकृतियॉ प्रेम, प्रकृति और मानवता के अक्षय आलोक से हमें अभिभूत किए बिना नहीं रहती। इन सौंदर्यवति एवं सत्यान्वेषी कलाकृतियों में मूलतः महात्मा बुद्ध की कालजयी करूणा, शांति और प्रेमभावों का संमिश्रण है। गालिब की मस्ती से, विश्व- कवि टैगोर के आनंदवादि अनुभूतियों से, महादेवी-पंत की छायावादि वृत्तियों से, मीरॉ-रैदास-कान्होपात्रा की भक्ति भावना से तथा कबीर-नानक-तुकाराम की सत्यान्वेषी वृत्तियों से ये रचनाएँ प्रभावित हैं। इस संग्रह में मेरी मूल सर्जनात्मक पेंटिंग्स के अलावा कुछ चुनिंदा विश्वविख्यात चित्रकारों की प्रसिद्ध चित्रकृतियों की अनुकृतियॉ भी प्रस्तुत की गयी हैं। इनमें प्रमुखतः उल्लेखनीय हैं चित्रतपस्वी बाबुराव पेंटर, एस.एम.पंडित, त्रिदांद, एम.एफ.हुसैन, शोभा सिंह, कुमार, मुखर्जी, जोसेफिन वॉल, लेनी, लिओनाउड आफ्रेगा तथा रोनी सोमी की पेंटिंग्स। इन विख्यात चित्रकर्मियों का मै ऋणि हूँ।

लंबे समय के इस यादगार कला सफर में अनेकों ने प्रभावित और प्रोत्साहित किया। इन में से किसे भूँलू ? किसे याद करूँ ? मेरी कलात्मक एवं साहित्यिक प्रतिमाओं में ये सभी मेरे लिए अक्षय आलोक दीप हैं। मेरे मेहनती लोककलासाधक नादर दादी, गबा बाबा, मेरे हरहुन्नरी पिता श्रद्धेय यशवंत दादा, जीवन भर सादगी से जीयी मेरी विमल माता को शतशः नमन करता हूँ। साहित्य के आलोकानंद से परिचित कराते मेरे मार्गदर्शक तथा वरिय साहित्यकार प्रो. डॉ.तेजपाल जी प्रति मैं विनम्रतापूर्वक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मेरे जीवन में प्रेम, सेवा एवं समर्पण के शब्दों को उँचाईयॉ प्रदान करके, तद्नुसार जीनेवाली मेरी जीवनसंगिनि संध्या का शुक्रिया अदा मैं किन शब्दों में करू ? मेरी सबसे लाडली कन्याएँ और मेरे हृदय की धडकनें मृणालिनी और श्वेतालिनी के लिए मेरे अनंत शुभाशिष जो मेरे लिए प्रेरणाओं से कम नहीं। मेरे स्नेहीजन धर्मराज जी-मीनाजी, अनिल-अबोली, प्रवीण-प्रज्ञा, दगडू, जॉर्ज, प्रशांत पूजारी, संदेश गोपाल

शर्मा, प्रो.डॉ.एल.ए.पाटील, महेश्वरजी, मनीषाजी, बापू नगॉवकर आदि के स्नेहबंधानों में आजीवन बंधे रहने की अभिलाषा करते हुए भूमिका का समापन करता हूँ। शब्द और रंगों की दुनिया के इस झरोखें से इन कलाकृतियों के बारे में इतना ही कहूँगा...............

''सावन की बरसती बूंदे हैं, ये कविताएँ ।
आशिकों की उड़ाती हुई, नींदे हैं, ये कविताएँ ।
चित्रकृतियों के इंद्रधनुषि रंग लेकर,
पाठकों के मनमयुर नचाने आई हैं, ये कविताएँ।''

भवतु सब्ब मंगलम !

तिथि - 21 मई 2016 (शनिवार)
(महात्मा बुद्ध जयंति/पूर्णिमा)

प्रो.डॉ.शशिकांत 'सावन'
अमलनेर (महाराष्ट्र)

विषय सूची

क्र.सं.	शीर्षक	पृ.सं.
(अ)	**विश्वदीप-वसुंधरा**	
1.	वैश्विक अंधःकार और विश्वदीप	2
2.	भाषा भूमि और भाव	4
3.	अत्त दीप भव	6
4.	अँखियान के देखि	8
5.	रीति प्रीति, बनाएँ संस्कृति	10
6.	ख्वॉब बुने पत्थरों ने	12
7.	पत्थर की मूर्तियॉ, अतित की स्मृतियॉ	14
8.	वेदनाएँ, भूतल को स्वर्ग बनाएँ	16
9.	त्सुनामी संवेदना	18
10.	अजंता की अप्सरा	19
(ब)	**सावन - संध्या**	
1.	दीपोत्सव जगमगाएँ सावन	21
2.	सावन के संग भीगे शब्द रंग	23
3.	संध्यादीप	25
4.	सावन के झुले, कोई कैसे भूले	26
5.	संध्या लजे, सौंदर्य सजे	28
6.	संध्या मुस्कुराए, शशि छा जाए	30
7.	दामिनी ! दिलों में दीव्य दीपिका दो	32
8.	इंद्रधनूषि गीत गाए सावन	33

9.	संस्कृति संवेदन, साकारते मन	34
10.	कुदरत का कालजयी करिश्मा है बेटियॉ	35
(क)	**वरूण-वर्षा**	
1.	रिमझिम रिमझिम बरसे नयना	37
2.	बादल छाएॅ, ऑचल लहराएॅ	39
3.	वर्षा आए, झुमी राहें	41
4.	पूर्णिमा पावस, अखियॉ अमावस	43
5.	झलकती बूॅदे, उडाती नींदें	45
6.	बूॅदों की छमछम, बनती हमदम	47
7.	पपिहा पुकारें पीहू.....पीहू.......	49
8.	जिंदगी की माला, पिरोती वनबाला	50
9.	पतझड़ सावन वसंत बहार	52
10.	बिजली ! बर्बरता को बरर्बाद करो	53
(ड)	**अभिलाष-अरूणा**	
1.	कलियॉ खिल उठी	55
2.	जगमगाकर जागे जिंदगी	57
3.	प्रभात की पनिहारन	59
4.	गॉव की ग्वालन	61
5.	सद्यस्नाता, बने सरिता	63
6.	अरूणा के गीत, बनते जीवन संगित	65
7.	नीर ही जाने पीर	67
8.	दीप जले, दिल ढ़ले	68

9.	नचाए नयनों में नश्वरता निशा	69
10.	लमहा लमहा तरसकर......	71
(इ)	**चॉद चकोरी**	
1.	चॉद को चाहे चकोर	73
2.	नाचे नभ की नृत्यांबरी	74
3.	उतरे उर में उर्वशी	75
4.	निलांबरी! नभ की निलाई न्यौछावरों	76
5.	सागर सरिता	78
6.	ढाई आखर प्रेम के	79
7.	दिया जले मज़ार पर	80
8.	साखी शबाब और शराब	82
9.	यामिनी यौवन, कतराए मन	84
10.	रहस्य रचे रजनी	85

(अ)
विश्वदीप-वसुन्धरा*

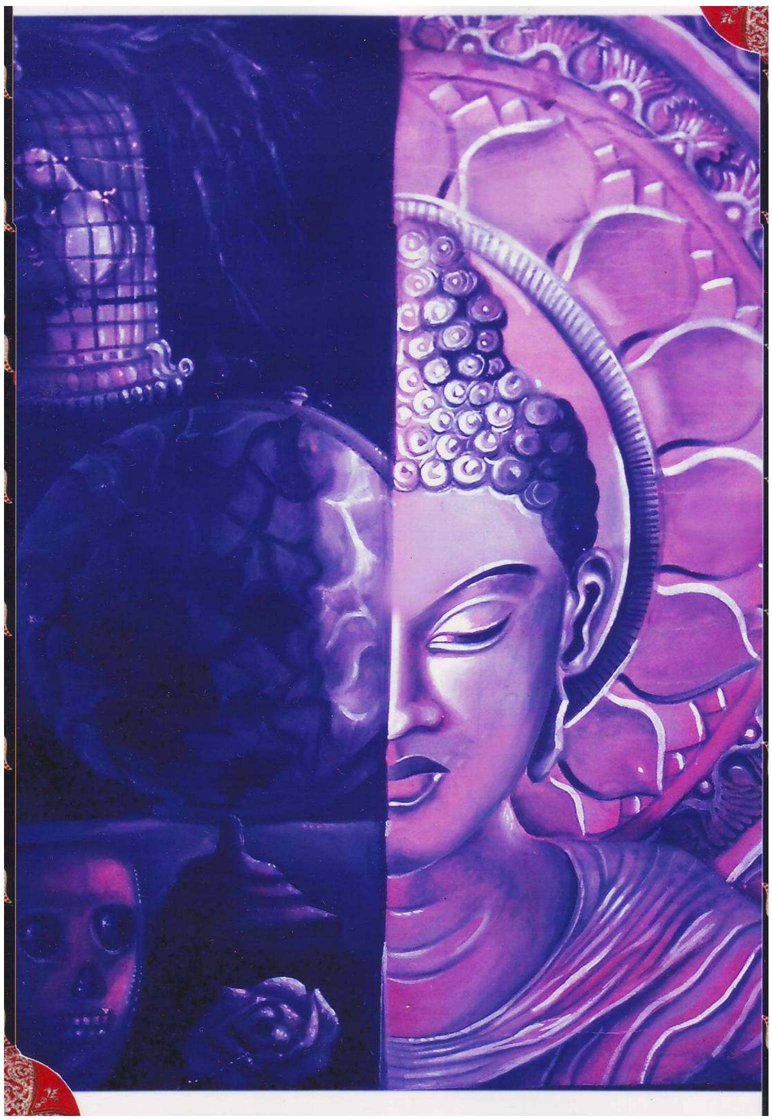

1. वैश्विक अंधःकार और विश्वदीप*

विश्व की यह रंगशाला
अब, बन रही है अंधियारा,
हटाने यह रंग काला,
विश्वदीप से लाए सवेरा ।
विष है क्या, और क्या है हाला ?
हर गली ने आज है वो पाला
हर पीड़ा के अब घूँट पीकर
बना लें आज कंठ निला
प्रीत ज्योत प्रज्चलित करके
चलो, फैलाये प्रेम उजियारा ।। 1।।
प्रेमभाव और समता ममता
खो चूका अब इनसे नाता।
कर के दूनिया, मुट्ठी में भी
मनुष्य आज का तृप्ति न पाता
ज्ञान कीर्ति एवं न्याय से
अब रोक ले यह जग आवारा ।। 2।।
युगपुरूष तथागत की भॉंति
हम भी, विश्व करूणा कुसुम बने।
वैश्विक अंधकार नष्ट कराने

* IMAGE NO. 0008

भास्कर से भारी विश्व दीप बने।
जहॉं को ही जन्नत करने का
आओ, दिखाये अब नये नजारा ।। 3।।

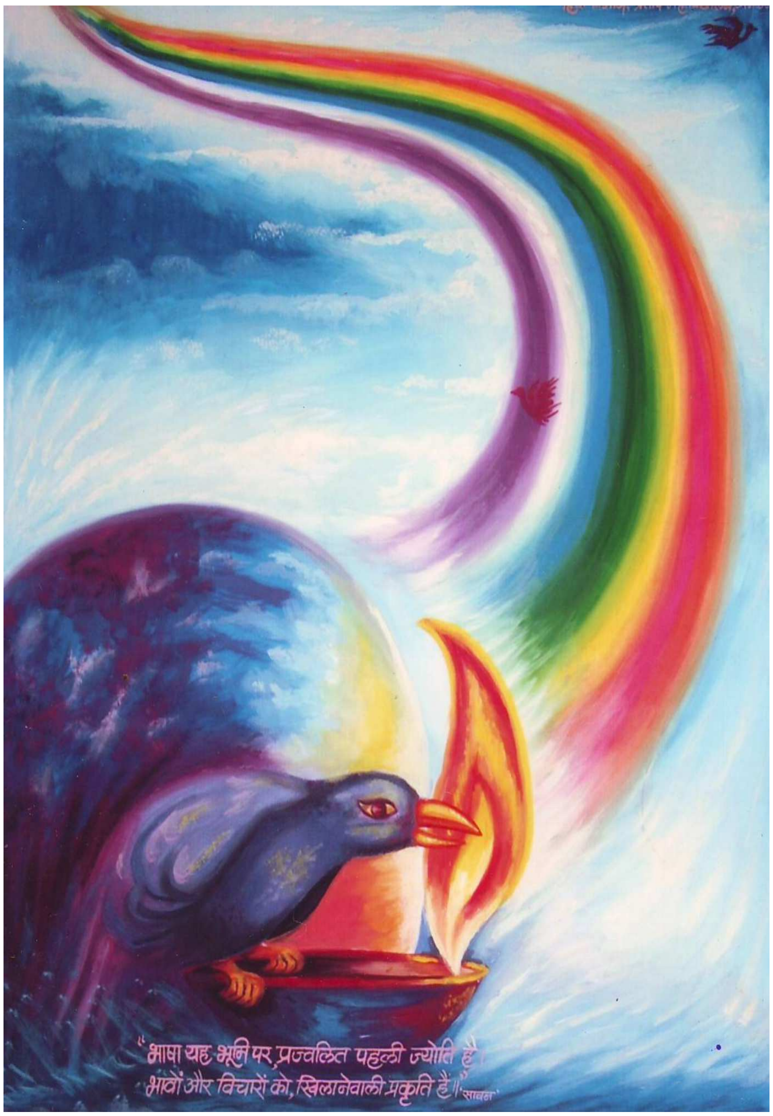
"भाषा यह भूमि पर, प्रज्वलित पहली ज्योति है।
भावों और विचारों को, खिलानेवाली प्रकृति है॥"
सावन

2. भाषा-भूमि और भाव*

भाषा यह भूमि पर,
प्रज्वलित पहली ज्योति हैं।
भावों और विचारों को,
खिलानेवाली प्रकृति हैं ।
चराचरों के मेल-मिलन की
प्राकृतिक दूति बनी भाषा
विरह-वियोग के मूल में
वटवृक्षी जड़ बनी भाषा
कोयल की कुहुकु में भाषा ही
मधुरता से गाती हैं ।। 1।।
भूमि ने, हम भुमिपुत्रों को
भाषा और भाव दिए
भवसागर को पार कराने
कारवॉ और किनारे दिये
ये भाषा एवं भाव ही
जीवन सागर के साहिल मॉझि हैं ।। 2।।
भाषा भूमि और भाव
इसी से साकार है, जीवन की नॉव
तो आवो ! इसको जॉचे-परखे,

* IMAGE NO. 0017

देख कि पहूँचे किस गॉव ?
भूमी पर विहरते हम विहग
मूसाफिर और यात्री हैं ।। 3।।

3. अत्त दीप भव*

‘‘अंतःकरण को प्रज्वलित करना
अत्त दीप भव है।
पर प्रकाश छोड, स्वयं प्रकाशना
अत्त दीप भव हैं ।
अत्त दीप भव यह,
आत्मोद्धार की बुनियाद है।
दुखी, पीडित, शोषितों की
नष्ठ होनेवाली फरियाद हैं ।।1।।
पीडितों को फौलाद बनाये
अत्त दीप भव
विकलांग वाणी में व्रज घोले
अत्त दीप भव ।।2।।
दुख, दुविधा दुर्दशा के दर्शन,
अत्त दीप भव से होते हैं।
मनुष्य को मानवता के अहसास
अत्त दीप भव से होते हैं ।।3।।
नीले नयन और भूखे भजन
दूर करे, अत्त दीप भव
पीली पीड़ा और अपमान का बीड़ा

* IMAGE NO. 0004

नष्ठ कर, अत्त दीप भव ।।4।।
अत्त दीप भव किसी जॉति का नही
मानवता का मौलिक महा मंत्र है।
चराचर के चरमोत्कर्ष का
दीव्य दीप बना यह तंत्र है ।।5।।''

शशि आर्ट
PACHORA

4. ॲखियान के देखि*

''ॲखियान के देखि में
कई कबीरों ने जीवन जीया।
सत्य-शिव सुंदरता से ही
जन जीवन का उद्धार किया ।
अंतःकरण की परपीड़ा ही
ॲखियों में आलोक भरवाती हैं।
करूणालय की करूणता ही
ऑखों से ओजाश्रु बरसाती हैं
देखो, इन गरिमामयी ऑखों में
जिस में जला नित, मानवता का दिया ।।1।।
सच्ची संवेदना और असिम आस्था
ऑखों को समंदर बनाती हैं
व्यापक विश्वास और दुर दृष्टि
ऑखों में आकाश भरवाती हैं
पुनः परखों उन फरिश्तों कों
पृथ्वी के लिए ही,
जिनका तिलमिलायां हिला ।।2।।
ऑखों अवतारों का आलोक नही
अंतकरणों की अमावस दिखाती हैं।

* IMAGE NO. 0030

ऑंखें चमत्कारों का नही
चराचरों का वास्तव विचार जगाती है
आज झॉकों अपनी ही ऑखों में
दृष्टि में हमने क्या-क्या भर लिया? ।।3।।''

5. रीति प्रीति बनाए संस्कृति*

''रीति और प्रीति
बनाये संस्कृति
जिंदगी इन्हीं से
बनती है प्रकृति ।
दूर देहात में गीत कोई गायें
पीड़ा में भी प्रेम उभरकर आये
मीट्टी की मूरत मीट्टी महकायें
कुदरत कंठ में कोयल बन जाऐं
मीट्टी की मृदलता में
मनुष्यता है जीती ।।1।।
मीट्टी के खिलौने मनों को मोहे
बांस का संगित बच्चों को भायें
छेडे हुए तार जिज्ञासा जगाये
निरव निःस्तधता में जमघट लगाये
मीट्टी की महिमा
मनमयुर नचाती ।।2।।
लोकगीतों की गायिका, गॉव गॉव गाये
घर ऑगन में अपनापन आनंद छाये
बच्चे और बुढें बचपना भूले

* IMAGE NO. 0011

खुशियॉ पाकर समायें न फूले
श्रमजीवियों की मेहनत
कभी सुख सौंदर्य में खोती ।।3।।''

6. ख्वॉब बुनें पत्थरों ने*

''कुदरत का करामती करिश्मा
धरती पर उतारा कारीगरों ने
पहाडों में पावन प्राण फुँके
और, ख्वॉब बुनें पत्थरों ने ।
जिंदगी के भाव
मूर्तियों में समा गये।
शालिनता सभ्यता के गीत
काले कंठों में छाये गये।।
पाषाणों में गीत गाये
सृजनशिलता के ज्वालामुखियों ने ।।1।।
चट्‌टानों को चिर, सत्य स्थापना
अलौकिक अंतकरण की साधना बनी।
शाश्वत सुंदरता का सृजन ही
श्वासों की मनोकामना बनी।
अभिमान और आदर्श गढ़े
पाषाण तराशनेवाली पीढ़ियों ने ।।2।।
पत्थरों को काट, गढ़ते गढ़ते
अनेक ऑखे पथराई
इन पथरीली ऑखों में ख्वॉब देखकर

* IMAGE NO. 0013

जन्नत और जिंदगी भी शरमाई
मरकर भी अमर होने के,
पाठ पढाये शिल्पियोने ।।3।।"

7. पत्थर की मूर्तियॉ, अतित की स्मृतियॉ*

''पत्थर की मूर्तियॉ
अतित की स्मृतियॉ।
गत स्वर्णिम युगों की
ये कालजयी कृतियॉ ।
पत्थर की फुलझाडियॉ
कुदरती, कलाकारी दिखलाये।
अंगीभूत अनोखेभाव
अप्रतिम अदाकारी बिखराये ।।1।।
पाषाण की पर्चिया
वैभव विलास लिखवाये।
सारे शरीर में जगह जगह
शीला लेखों के शब्द खुदवाये ।।2।।
पाषाण की आकृतियॉ
सभ्य समाज की धरोहर बनी।
रंग रेखाओं में कटते-बॅटते
तन और मन की वाणी बनी ।।3।।
शीलाखण्ड की शक्तियॉ
मनों को मोह शिल्पजीत कहलाई।
शिल्पनगरी के हर शिल्प में

* IMAGE NO. 0027

जिंदगी की जिंदादिली जगमगाई ।।4।।
चट्टानों की चिंगारियॉ
है जलाती-बुझॉती जिंदगियॉ।
गत वैभव के इन अवशेषों से
है आज भी प्रेरित कई जीवनियॉ ।।5।।''

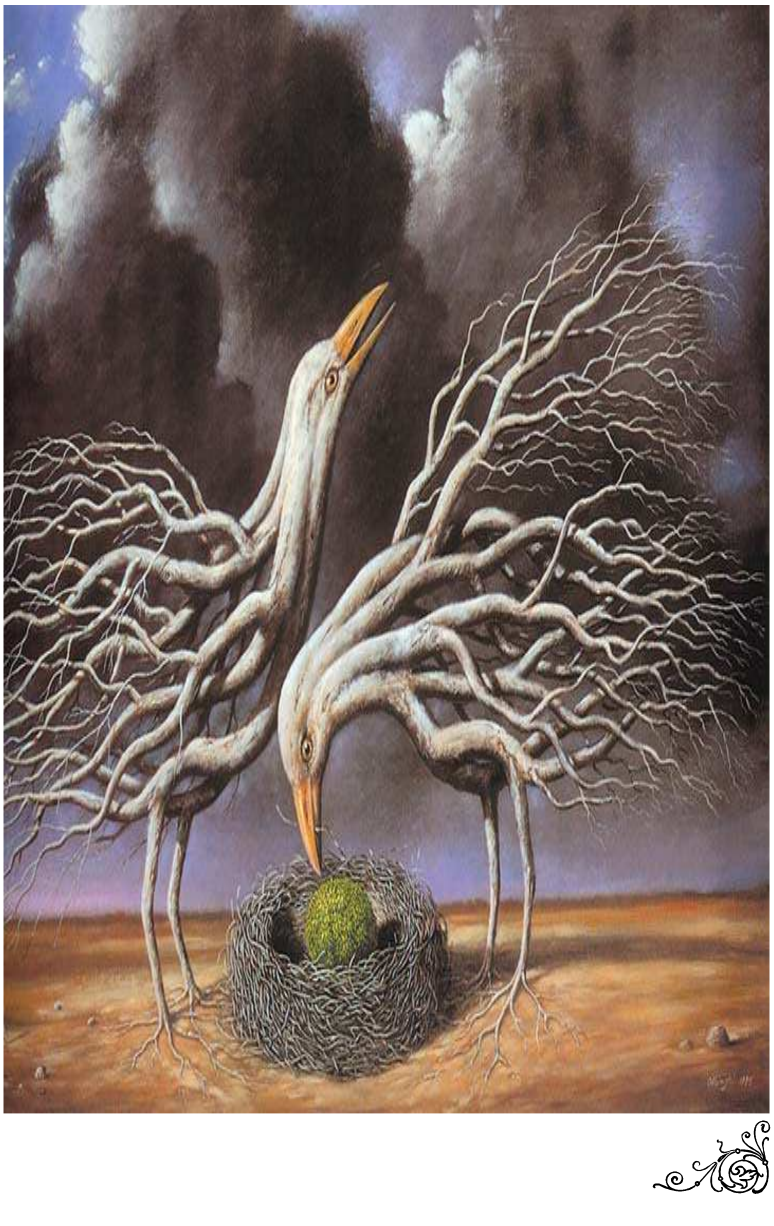

8. वेदनाएँ, भूतल को ही स्वर्ग बनाये*

‘‘वेदनाएँ........
भूतल को ही स्वर्ग बनाये
सृष्टी संवेदनाओं में
नित्य नया निखॉर लाये ।
वेदनाएँ........
मनो मनों को मीत बनायें
पीड़ा में भी प्रियजनों के
सुखद स्मृतियों के क्षण लाये ।।1।।
वेदनाएँ........
अनेक ऑखों में ॲधेरा लाये।
पथीक को प्रकाश देते देते
जीवन ज्योति जग में जलाये ।।2।।
वेदनाएँ........
विरह में व्याकुलता के घन बन जाये
अंतःकरण की अभिव्यक्ति में
रिम झिम बरसाता सावन बन आये ।।3।।
वेदनाएँ........
आशा निराशाओं को अपना बनायें
पराये निराले पक्षियों को भी

* IMAGE NO. 0007

पावन प्रेम की पहचान करायें ।।4।।
वेदनाएँ........
नर को ही नारायण बनाये।
देवसृष्टि के दर्शन त्याग,
संसार में ही समृद्धि सँजाये ।।5।।''

'सुनामी संवेदना'
संकल्पना • सृजन • स्नेहभेट •
प्रा.डॉ. शशिकांत सोनवणे 'सावन'
अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग, प्रताप कॉलेज, अमळनेर.

9. त्सुनामी संवेदना*

‘‘सूर्य-चंद्र की हजारों मणियॉ एक क्षण में सागर में समा गई
जीवन नश्वरता भी, जीने का नया संदेश दे गई ।
सागरी लहरों पर सॅवार होकर
त्सुनामी का सर्वनाश आया
अनगिनतों के प्राण लेकर
भूकंप का छाया भयावह साया
जिंदगी की कितनी तसविरें, एक क्षण में ही टूॅट गई
सूर्य-चंद्र की हजारों मणियॉ एक क्षण में सागर में समा गई ।।1।।
काल के गाल में जो अचानक समाये
वे किसी सूर्य चंद्र पुष्प से कम न थे।
ख्वॉब जिन्होंने अचानक गॅवाये
ये किसी सिकंदर से कम न थे।
कितने फूलों की पावन पंखुडियॉ, पलभर में ही मूरझॉ गई
सूर्य-चंद्र की हजारों मणियॉ एक क्षण में सागर में समा गई ।।2।।
कितनी सदियों से कितने भूकंपों ने
अवनी पर आतंक मचाया।
श्वास-उच्छासों की परतों ने
जनम मरण का खेल रचाया
पृथ्वी के ही गर्भ में, भूकंप की बिजली गिर गई
सूर्य-चंद्र की हजारों मणियॉ एक क्षण में सागर में समा गई।।3।।’’

* IMAGE NO. 0018

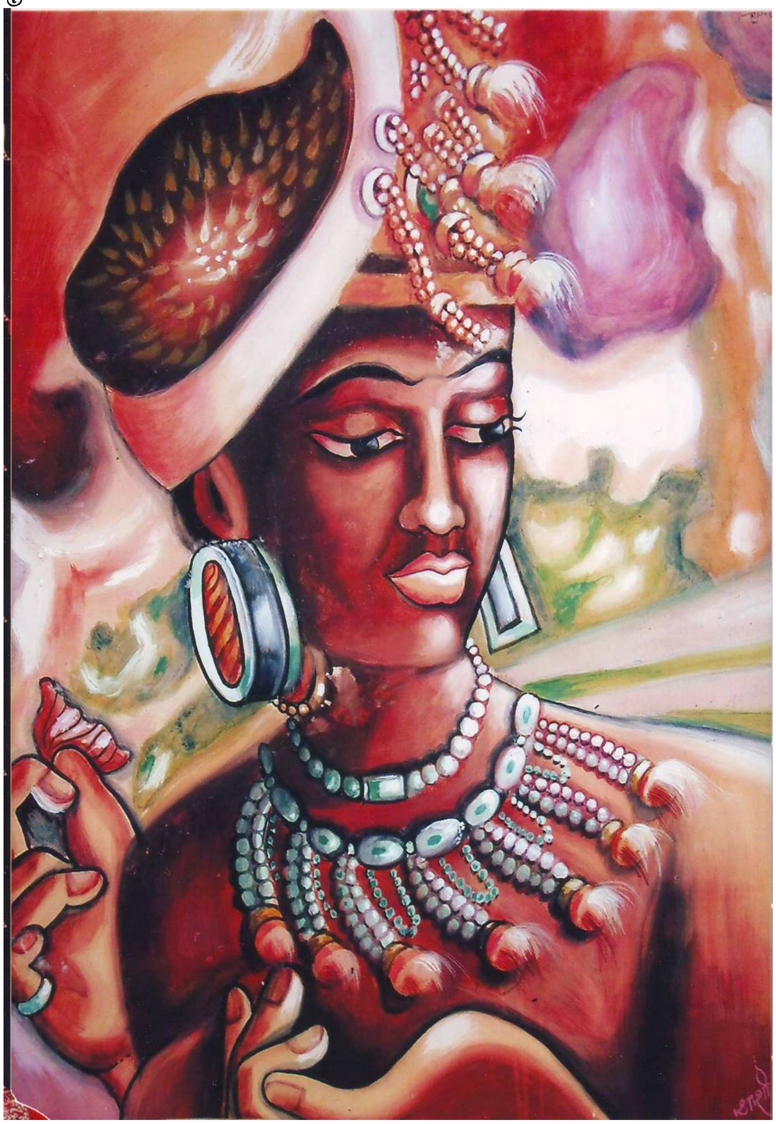

10. अजंता की अप्सरा*

''अजंता की अप्सरा से पाषाणी गुफाएँ गूंज उठी
पत्थरों के रंगों से सोई सदियाँ जाग उठी ।
इतिहास के पृष्ठ रंगों ने खोले
चित्रों में चिरंतन जीवन बोले
पहाड़ी पाषाण से लिपट संस्कृति
गौरव से विभोर होकर डोले
अजंता की कारागरी में, जीवन की अमरता खिल उठी
अजंता की अप्सरा से पाषाणी गुफाएँ गूंज उठी ।।1।।
साँवला वर्ण, साँवली बाहें
तन पर सुसज्जित आदिम माला
खोकर किन्ही ख्यालों में
पुकारे, अप्सरा बनकर बाला
आँखों में अप्सरा के जैसे जिंदगी झूम उठी
अजंता की अप्सरा से पाषाणी गुफाएँ गूंज उठी।।2।।
किन चित्रकारों ने किन रंगों से
चिर चैतन्य का सृजन किया ?
पत्थरों के पाषाणी सीने पर
किसने फुलों को जन्म दिया ?
अप्सरा की तस्वीर से, भू पर स्वर्गनगरी छा उठी
अजंता की अप्सरा से पाषाणी गुफाएँ गूंज उठी ।।3।।''

* IMAGE NO. 0006

(ब)

सावन-संध्या*

1. दीपोत्सव जगमगाये सावन*

''दीपोत्सव जगमगाये सावन
घर-ऑगन महकाएँ सावन
दिलों दिलों में दीपावली के,
दिल्लगी दीप जलाए सावन ।।1।।
श्रमिकों की प्यासी बुँदों को,
अनमोल मोती, बनाएँ सावन
किसानों की खुशियों में
त्यौहार बनकर आये सावन ।।2।।
गॉव की पुरानी मीट्टी में
नव संजीवनी भर दे सावन
लहलहाती इन फसलों में
सोना बनकर चमके सावन ।।3।।
खेल खलियान, नदी झरनों पर
जन उल्हास बढ़ाए सावन
जग की रीत, मन का प्रीत,
दोनों को मिलाए सावन ।।4।।
दुःखी, निराश, अँधियारे दिलों में
'दीप पर्व' बन आए सावन
मुस्कुराते गालों की लाली में,

* IMAGE NO. 0051

प्रेमगीत गाता जाए सावन ।।5।।
करिगर, कवियों की रचनाओं में
प्रतिभा बनकर आये सावन।
बुद्धि, कल्पकता के घनों से
सृजनशिलता बरसाये सावन ।।6।।''

'सावन'
सावन के संग, भीगे शब्द रंग।

2. सावन के संग भीगे शब्द रंग*

''सावन के संग........
भीगे शब्द रंग।
प्रकृति बनें मयुर........
झूमें अंग अंग ।
सावन के संग........
समीर हुआ दंग।
बदलों की गेंद बनें........
उछले, जलतरंग ।।2।।
सावन के संग........
दामिनी के नृत्य ढंग।
आसमॉ पीघलें और........
जम जाए धरती का प्रत्यंग ।।3।।
सावन के संग........
बरसती बुॅदे, कभी करती तंग........
सुख-दुख की बौछावर में........
जीवन गीत, बनता अभंग ।।4।।
सावन के संग........
प्यासों की होती है, जंग।
इस जीवनदायी की प्रतिक्षा में........
स्वप्नमयी ऑखे, कभी होती है भंग ।।5।।

* IMAGE NO. 0020

'संध्या'
"संध्या सहेली, हैं प्रीत पहेली .. सृष्टि-सावन की, हैं चाहत नवेली."
'सावन'

3. संध्यादीप*

''सुहानी संध्या सॉझ सॅजाये
मन का मीत प्रित जगायें
कोई कैसे रहे अकेले
जब संध्यादीप यादें रोशनायें ।
संध्यादीप तनहा जले
प्रेम और पीड़ा संग पले।
अस्तित्व ॲधेरे को अर्पण कर
आलोक बिखराये आकाश तले
खामोशी का यह खुॅमार
खोई चाहत चहकाये ।।1।।
संध्यादीप का चुप्पी से जलना
मन की मौन मधुरता है
घर, ऑगन, कुडे कचरे में जलना
दीप-दीपिका का सुंदरता हैं।
चारों ओर चराचरों में
संध्यादीप आलोक बिखरॉये।।2।।
घोर अंधकार से अकेली लडती
संध्यादीप की अकेली बाती
उमंग उत्साह उरों में भर

* IMAGE NO. 0019

देवरूप बनती दीपक जॉति
दीपशिखा के नश्वर नर्तन भी
शाश्वत सत्य सुनाये।।3।।''

4. सावन के झूलें, कोई कैसे भूलें ?*

‘‘सावन के झूलें
कोई कैसे भूलें
बहकाती बहार
जब ऑचल में ओंढे ।
सावन के झूलें
बरसाते ओले
रसरंगी बौछार में
बदन होते गीले ।।1।।
सावन के झूलें
अंग अंग खिले
झूलों पर झूमकर
धरती आकाश मिले ।।2।।
सावन के झूलें
कराते कुंतल खुले
काले केशों को देखकर
काली कोयल का कंठ खुले ।।3।।
सावन के झूलें
नचाये नयन नीले
साजन सजनी के सपने दिखाकर

* IMAGE NO. 0056

करायें किसी के हाथ पीले ।।4।।

सावन के झूलें

ले आये अम्बर तले

विरह मिलन के इस मौसम में

जिया जिंदगी खुशियों से फुलें ।।5।।''

61/1190

5. संध्या लजे, सौंदर्य सॅजे*

‘‘संध्या लजे
सौंदर्य सजे
दर्पण में दमयंती
भीने भाव भजे ।
सादगी शालिनता
रूपराशी रोशनाये
लावण्यमयी ललना
खुबियों में खोये ।।1।।
केशरिया बसन
बिजली-सा बदन
सुकुमार सुमनों में
मिनाक्षी मगन ।।2।।
ऑखे अध खुली
आसक्त अलबेली
संध्या समय में
गर्दिशों-सी गीली ।।3।।
अनोखी अदायें
फुहार की फिजायें
अवनी की अप्सरा

* IMAGE NO. 0012

स्वर्ग साथ लाये ।।4।।
तन्मयी तन
मिट्टी की महक महकाये
मृग्मयी मन
मधुर मांगल्य के गीत गाये ।।5।।''

6. संध्या मुस्कुराये, शशि छा जाये*

''संध्या मुस्कुराये
शशि छा जाये
रंगों के ऑचल में
रौनक शरमाये ।
चुनरी के रंग
चारों ओर बिखरे
चमकिला चेहरा
निलाम्बर में निखरे
रविकरों के रूप सॅजाकर
स्वर्णिम संध्या, रवि-शशि मिलाये ।।1।।
संध्या सहेली
है, प्रेम पहेली
सृष्टि सावन की
है चाहत नवेली
सीमित समय में भी संध्या
सैकड़ों बहारे लुटवाये ।।2।।
संध्या का आगमण
है मीत का मिलन
इस परत प्रीत में

* IMAGE NO. 0048

छिपे जीवन मरण
काली रात के दामन में भी संध्या
चंद्र तारे बरसायें ।।3।।''

7. दामिनी ! दिलों में दीव्य दीपिका दो*

''मानवता की पहचान कराने, दामिनी ! दिलों में दीव्य दीपिका दो
विषमता का अंधकार हटाने तुम समता का नव उजियाला दो ।
रोज पीड़ाएँ फैलाती है बाहें
करूणा भी यहॉ फूटफूटकर रोये
प्रेम पथिक बेचारा किस पथ जाये ?
कॉटों भरी है यहॉ जीवन की राहे
जीवन के कॉटों को दामिनी, अब तुम कुसुमों में बदल दो
मानवता की पहचान दामिनी ! दिलों में दीव्य दीपिका दो ।।1।।
यहॉ ममता का भी मूल्य लगा है
स्तुंष्ठि पर शुन्य लगा है
कोई कैसे चैन से जीये ?
यहॉ जीनेपर भी प्रश्न चिहृन लगा हैं
जीवन के इन गहन प्रश्नों को दामिनी अब तुम ही सुलझा दो
मानवता की पहचान कराने, दामिनी ! दिलों में दीव्य दीपिका दो ।।2।।
जीने के यहॉ ढंग निराले
मरने के भी कई बहाने
मरकर जीते, जीकर मरते
दॉव लगाते कई दिवाने
इन जनम मृत्यु के सौदागरों को, दामिनी तुम कठोर दंड दो
मानवता की पहचान कराने दामिनी ! दिलों में दीव्य दीपिका दो ।।3।।''

* IMAGE NO. 0054

8. इंद्रधनुषि के गीत गाये सावन*

''आषाढ़ को घिर लाये सावन
बिजलियों संग छाये सावन
बनकर मन मयुर किसी का
खुद को बिसराये सावन ।।1।।
कृषकों के श्रम कण बने सावन
फसलों में नवरूप ले सावन
क्जली और हिंडोलों में
गोरियों के कंठ बस जाये सावन ।।2।।
विरह के घनी पीड़ा बने सावन
प्रेम का बीडा बने सावन
ढ़ाई आखर प्रेम का बनकर
ऑखों से नित बरसे सावन ।।3।।
सभी को अपना बनाये सावन
अपने पराये भेद मिटाये सावन
सुख दुख के इस जीवन में
इंद्रधनुषि गीत गाये सावन ।।4।।
अमर प्रेम के गीत गाता,
हिर-रॉझा बन जाए सावन
सोहनी-महिवाल के रूपों में
पानी बनकर पुकारे सावन ।।5।।''

* IMAGE NO. 0044

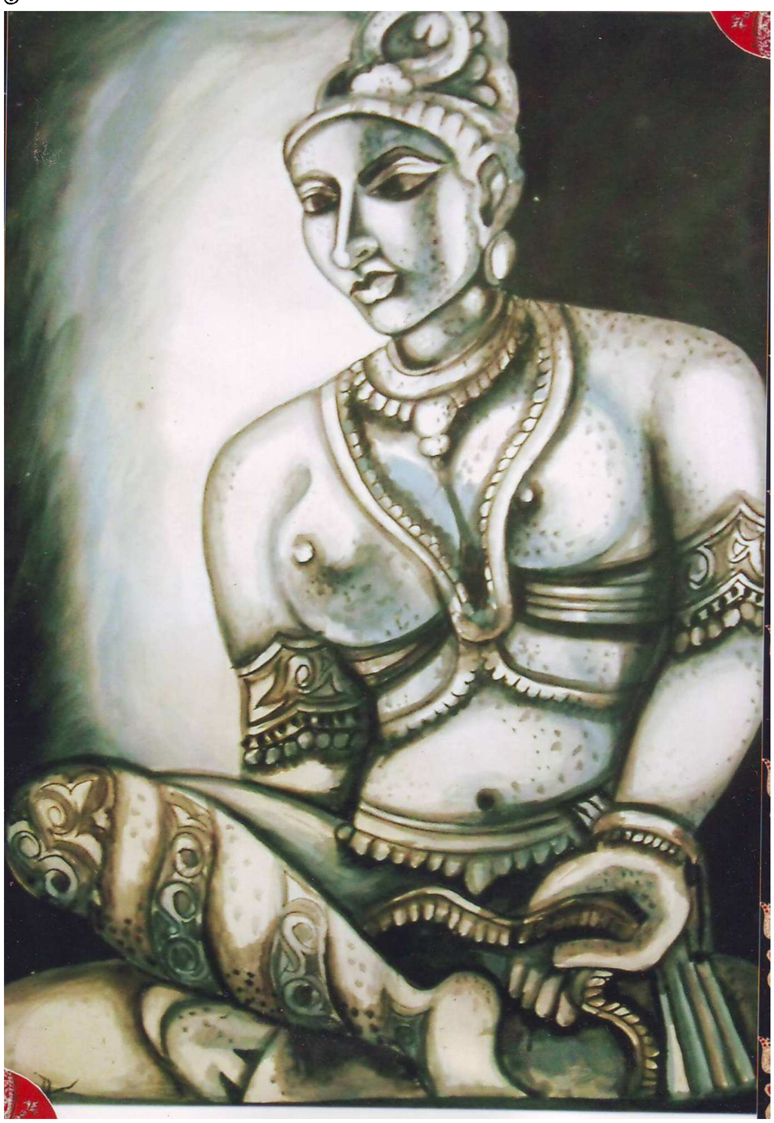

9. संस्कृति संवेदन, साकारते पत्थर के मन*

‘‘पत्थरों की मूर्तियों में आखिर तनमन जाग उठे हैं
संस्कृतियों के संवेदन अब कंठ में आ फूटे हैं ।
दिवानी थी वह अभिव्यंजना गहरी
जो, पहाड़ों में सृजन रचाती थी
खुद के जीवन को मीटाकर
सत्य सौंदर्य सॅंजाती थी
शिल्पशिल्पों से जीवन संदेश, तीर बनकर छुटे हैं
पत्थरों की मूर्तियों में आखिर तनमन जाग उठे हैं ।।1।।
कैसे होगे वे मनुष्य मन ?
जिन में सौंदर्य सेवा समाई थी
अतीत के अभाव आक्रोश में भी
जिंदगी चॉंद तारो को छु आई थी
मानवता को गढ़ाते हुये, कई शिल्पियों के ख्वॉब टूटे हैं
पत्थरों की मूर्तियों में, आखिर तनमन जाग उठे हैं ।।2।।
भीषण पथरिली चट्टानों पर किसने
मासुम फुलों को आबाद किया ?
पत्थरों के संग प्रीत कराके
किसने शीलाओं को सर्वस्व दिया ?
महान मूर्तियॉं गढ़ाते हुए, कई प्राण उन पर लूटें हैं
पत्थरों की मूर्तियों में आखिर तनमन जाग उठे हैं ।।3।।’’

* IMAGE NO. 0028

10. कुदरत का कालजयी करिश्मा है बेटियॉ*

''कुदरत का कालजयी करिश्मा है बेटियॉ
अनगिनत खुशियों की फरिश्ता है बेटियॉ
बेटियों की भावनाओं को जरा परखकर तो देखे,
इस जीवन का अनमोल रिश्ता है बेटियॉ ।
परिवार जनों के लिए खुशियॉ लुटाती है बेटियॉ
ऑसुओं को छिपाकर, हमेशा मुस्कुराती है बेटियॉ
कभी इनके जीवन का मूल्यांकन कर के तो देखे,
औरों के लिए ही अक्सर जीवन जीती है बेटियॉ ।।1।।
जिंदगी की तप्त रेगिस्तॉन की शीतलता है बेटियॉ
सदियों से समाज की शालिनता है बेटियॉ
कभी इनकी फौलादी क्षमताओं को जॉचकर तो देखे,
इस जमीन और आसमान को झुकाती है बेटियॉ ।।2।।
दोस्तों ! दान और अपमान की वस्तु नहीं है बेटियॉ
हत्या और अत्याचार का साधन नही है बेटियॉ
बेटियों की ही कोख से पैदा होनेवाले साथियों !
युगों युगों से हमारी, सच्ची पालनहार है बेटियॉ ।।3।।
विश्व वैभव की दीव्य दीपिका है बेटियॉ
साहित्य कला संस्कृतियों की रक्षिता है बेटियॉ
जरा अबलापन के परम्परागत चष्मे को उतारकर फेंके
क्यों कि बेटों से भी अब दो कदम आगे बढ़ रही है बेटियॉ ।।4।।''

* IMAGE NO. 0046

(क)

वरूण-वर्षा*

1. रिमझिम रिमझिम बरसे नयना*

‘‘रिमझिम रिमझिम
बरसे नयना
झिलमिल झिलमिल
छाये सपना ।
बुॅदों की बौछार से
दुल्हन बने धरती
पर, प्रियतम की प्रीत से
सूनी ऑखे झरती
मायुस मन का विव्हल विहग
कैसे उड़ाये डैना ? ।।1।।
रूपहली, रिमझिम बरसाते
आकाश धरा मिलाती
विरह की वेदनामयी यादें
हृदय पर बिजली गिराती
दर्द संग धाराओं का भी
असह्य है दुख सहना ।।2।।
नादान नयनों की नाराजगी का
जग जन्नत से क्या नाता ?
जहॉ प्रियतम ही ऑखों में

* IMAGE NO. 0052

धन बन कर समा जाता
कोई कैसे ऑसु रोके ?
जब प्रियतम को ही है ऑखों में रहना ।।3।।''

'वर्षा'
"वसुंधरा की व्याकुलता को शमित कराये वर्षावृष्टि ।
भूतल को ही स्वर्ग बनाये, वर्षा की सावन सृष्टि ।।"
'सावन'

2. बादल छाये, आॅचल लहराये*

‘‘बादल छाये
आॅचल लहराये
प्रीत में प्यासा मन
किसी, सावन को बुलाये ।
कजरारे बादल
उड़ाये आॅचल
बांधे प्रियतम के पैरों में
खुशियों के पायल
नाच नचाते इन नूपूरों में
मन भी लिपट जाये ।।1।।
श्यामल बादल
कभी राधा से मिलाये
तो कभी बन्सी बजाकर
मन को मीरा बनाये
मधूर मोहिनी के संग नाच
मन के मयुर नचाये ।।2।।
बेशुमार बादल
आकाश के मीत बनते
धरती पर उतर

* IMAGE NO. 0023

प्रेमियों की प्रीत बनते
बादल भूमि की प्रीत ही
प्रियजनों को तरसायें ।।3।।''

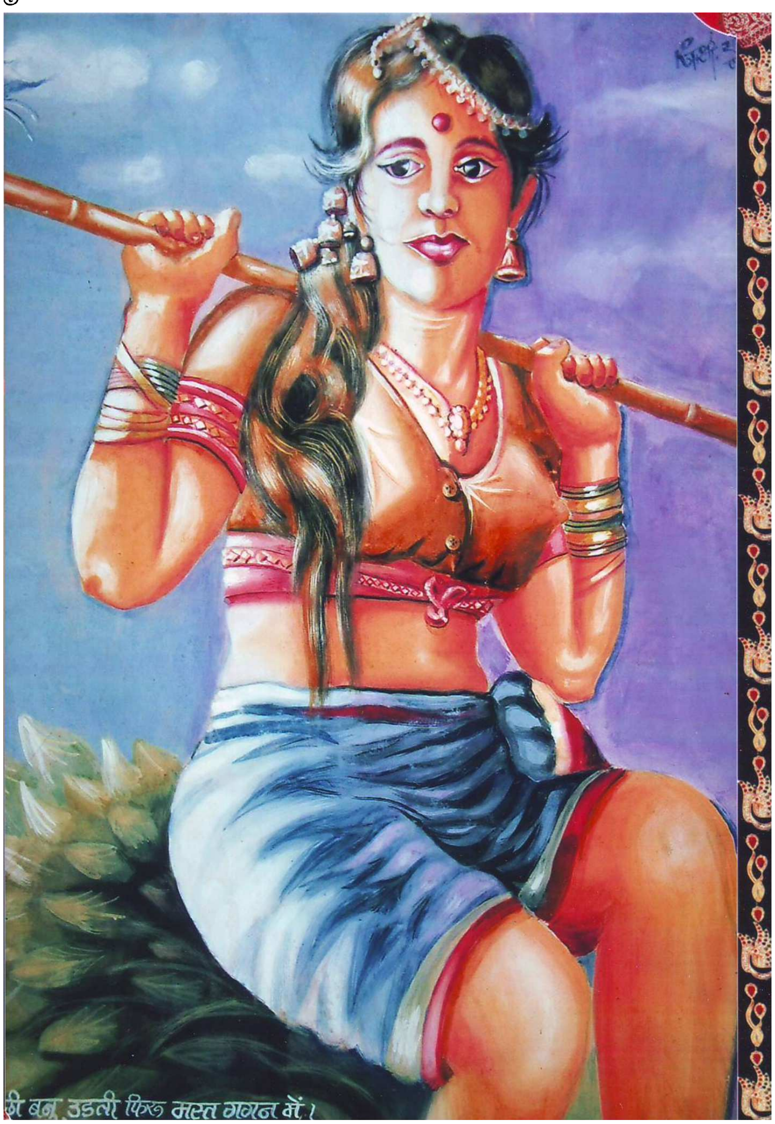
बनू उडती फिरू मस्त गगन में।

3. वर्षा आये, झूमी राहें*

''वर्षा आये
झूमी राहें
प्यासी पृथ्वी पर
आनंद बनती हैं आहें ।
वर्षा की राह में
धरती ऑखे बिछाती
दुखी दिल की पीड़ा
वह दरारों से सुनाती
वसुंधरा को वर्षा वृष्टि
अंग अंग में भाये ।।1।।
वर्षा की वृष्टि
आकाश धरा को मिलाती
संसार सृष्टि में
नवचेतना खिलाती
चहु ओर छॉति बहुरंगी बहारे
जिनके बीज दोनों ने बोये ।।2।।
जीवनदायिनी वर्षा,
तुम चराचरों का उद्धार करों
झुमती इन राहों के

* IMAGE NO. 0005

दुख का नाश करें
देखो इन दयनिय दामनों को
जिनकी, तुम्हें पुकारती है बाहें ।।3।।''

4. पूर्णिमा पावस, अखियॉ अमावस*

''पूर्णिमा पावस
अखियॉ अमावस
फिर भी दिलबर के दिदार का
नित्य जगे, मन में साहस ।
पीली पूर्णिमा पावस की
प्रकृति में शबनम बिखराये
अमावस बन ऑखों में
वह अंधकार फहराये ।।1।।
हे प्रेमलिन, प्रिय पावस !
जब तुम वसुंधरा के वसंत दूत हो
तो मेरे ही मन के मीत से
तुझे क्यों नही मिलाते हो ? ।।2।।
प्रेम पीड़ा के परिचायक पावस !
जब तुम आर्त स्वरों को सुनते हो
तो मेरे अबोल ऑसुओं की भाषा
अब तक क्यों न समझते हो ? ।।3।।
पावस-पूर्णिमा का प्रीत संगम
प्रकृति में चार चॉद लगाता है
ऑखे अंधकार का मिलन

* IMAGE NO. 0040

जैसे प्रेम ऑसमान से गिराता है ।।4।।
अमावस प्रियतम के विरह की
ऑखों में कब तक छायी रहेगी ?
बरसकर पावस तुम तो जाते हो
पर इन ऑखों की बदली कब जायेगी ? ।।5।।''

5. छलकती बूँदे, उड़ाती नींदें*

''छलकती बूँदे,
उड़ाती नींदें
साजन सजनी के सपने में
अलसायी ऑखें मूँदे ।
छलिया बूँदे
प्रियतम को छले
ऑखों के बन ऑसू
प्रेम पीड़ा में पले ।।1।।
छलछलाती बूँदें
कभी खुशियॉ छलकाये
डोर बन दामिनी की
कभी सपने भी जलाये ।।2।।
छबिली बूँदें
कभी संगीत छमकाये
रूप की राशी बिखेर
कभी पैरों में घुँगरू बंधाये ।।3।।
छिपी रूस्तम बूँदें
कभी प्रेमियों की प्रीत बनती
ऑखों से बहकर भी

* IMAGE NO. 0050

कभी मनों का गीत बनती ।।4।।
बेदर्दी बूँदें
कभी दर्द में भी राह दें
पीड़ा बढ़ाकर प्रीत की
उसे विरह़ वेदना का नाम दे ।।5।।''

6. बूँदों की छमछम, बनती हमदम*

''बूँदों की छमछम
बनती है हमदम
पहली प्रीत की
जैसे बजती हो सरगम ।
बूँदों की छमछम
प्रीत गीत गायें
भीगी बरसात में
साजन सजनी नहाये
मदहोश मोहब्बत में
मनमयुर नाचे हरदम ।।1।।
बूँदों की छमछम
तन मन में समायें
मीट्टी को महकाकर
पहला प्यार जगाये
पावस की पायल से
धरती भूलती है हरगम ।।2।।
बूँदों की छमछम में
प्रेम के रसरंग खिले
गोरी के गुलाबी ऑचल में

* IMAGE NO. 0039

जिंदगी के जैसे जश्न झूले
सावन के मधुर मिलन से
खो जाते हैं, हर सनम ।।3।।"

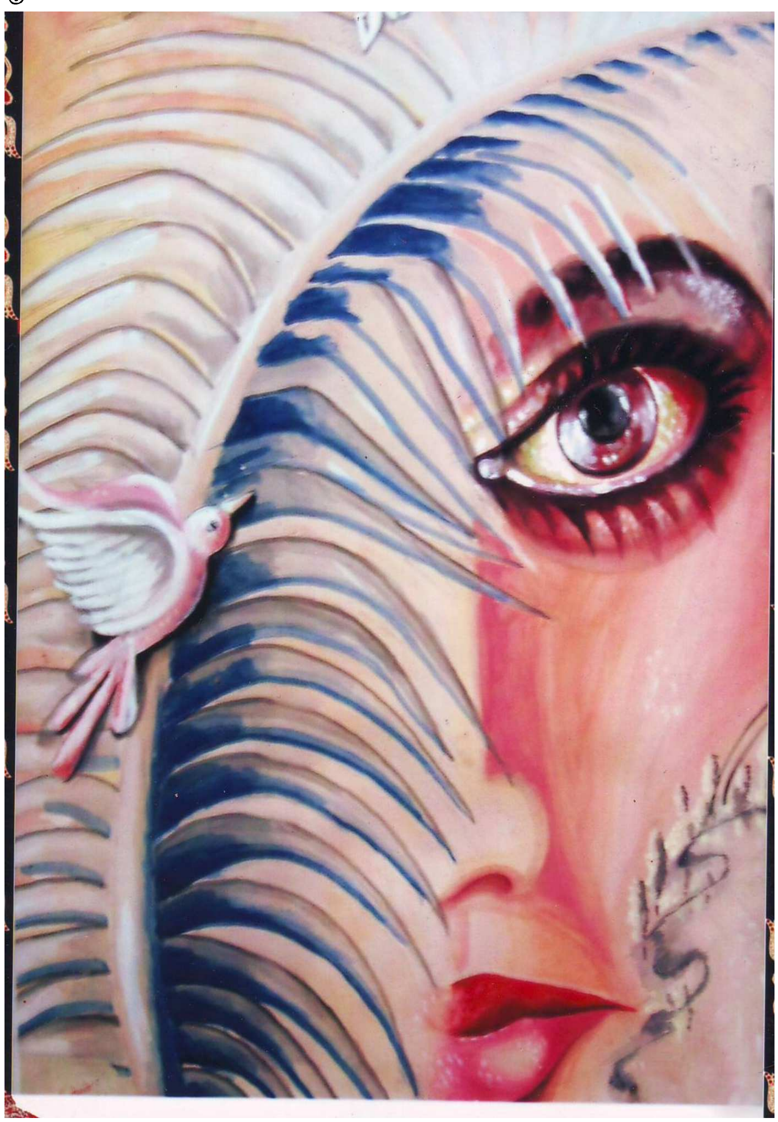

7. पपीहा पुकारे, पीहू...पीहू...*

''प्यासी पृथ्वीपर नित, पपीहा पुँकारे पाहू........पीहू........
प्रियतम पावस ! तुम बिन प्यासा मैं कैसे जीउ ?
पावस ! तुम्हें पुकारतें-पुकारतें
कंठ मे प्राण सूखते हैं
एक बूँद पाने के लिए
प्राण, पखेरू संग तरसते हैं
वेदनामयी वाणी को, पावस ! कैसे मैं सिउँ ?
प्यासी पृथ्वीपर नित, पपीहा पुँकारे पीहू....पीहू.....।।1।।
है दूर लोक के प्रियतम पावस !
सदियों से प्राण, तुम्हें पुकारें
सॉसों में भरकर सावन, तुम्हें,
जीते है, सॉझ सकारे
अमृतमयी आस में सावन ! दर्दो को फिर क्यों न सहूँ ?
प्यासी पृथ्वीवर नित, पपीहा पुँकारे पीहू....पीहू.....।।2।।
पावस ! तुम्हारे विरह में
प्यासी पृथ्वी संग पपीहा जले
बेचैनी के स्वर सॉज पहन
व्याकुल वेदना में विरह पले
हे जीवनदायी पावस ! यह प्रेमपीड़ा और किसे कहू ?
प्यासी पृथ्वीवर नित, पपीहा पुँकारे पीहू....पीहू.....।।3।।''

* IMAGE NO. 0014

8. जिंदगी की माला, पिरोती वनबाला*

''जिंदगी की माला
पिरोती वनबाला
गीरि वनों में फैलाये
सभ्य संस्कृति का उजियाला ।
आदिबालाओं की हॅसी
बिखरायो रूपहली राशी
झिल झरनों में उतरी हो
जैसे जीवन की अनमोल खुशी
मधुबालाओं की मधु मुस्कान में
निखरा है नवजीवन निराला ।।1।।
आदिवासी ये गीरीबाला
प्रकृति में जिनका जीवन पला
आकाश का आशिष छत्र ओढ़कर
धरती की गोद में जीवन खिला
वनबालाओं के वसन आभूषणों से
खिल उठा है, मीट्‌टी का रंग सॉवला ।।2।।
युगों युगों से आदिम कन्याएँ
सत्य सौंदर्य को सॅवारती है
मन में अनेक आघात छिपाये

* IMAGE NO. 0010

जीवन के प्रेमगीत गुनगुनाती हैं
शालीनता सादगी में शाश्वत हुआ
दुल्हन धरती का रूप शर्मिला ।।3।।''

9. पतझड़, सावन, वसंत, बहार*

''पतझड़, सावन, बसंत, बहार ने जिंदगियॉ खिलाई
जीवन के सागर में इन्होंने कश्तियॉ चलाई ।
पीले पुराने जीर्ण पत्तों को
पतझड़ ही विराम दिलाता हैं
दर्द दिल का दूर कराके
मीट्टियों को मिलाता है
पत्तियों को यहॉ झडातें हुए पतझड़ ने भी अमरता पाई
पतझड़, सावन, बसंत, बहार ने जिंदगियॉ खिलाई ।।1।।
बसंत बहार और सावन तो
भूतल पर ही स्वर्ग बसायें
उमंग उल्हास की संजीवनी से
मुर्दों में भी नवप्राण जगाये
सावन के साथियों ने सभी, खुशियॉ तमाम यहॉ बिखराई
पतझड़, सावन, बसंत, बहार में जिंदगियॉ खिलाई ।।2।।
मोहिनी ले आये मौसम
खुशियों को आबाद करें
रहे सलामत ये सदियों तक
सृष्टि के शृंगार करें
मीत और मोहब्बत भी, इन्हीं मौसमों से ही जगमगाई
झड़, सावन, बसंत, बहार ने जिंदगियॉ खिलाई ।।3।।''

* IMAGE NO. 0053

10. बिजली ! बर्बरता को बरबाद करों*

''सदियों की बर्बरता को बिजली तुम बरबाद करों
विकृत रूढि रस्मों का क्षणभर में सर्वनाश करो ।
आदर्श पुरानी राहों के
आज अपाहिज, मरीज हुए
कही मर न् जाये मरीज ये
जो उपेक्षित आज हर द्वार हुए
मरें आदर्शों में बिजली तुम, चैतन्य की संजीवनी भरों
सदियों की बर्बरतो को बिजली तुम बरबाद करो ।।1।।
जहॉ ज्ञानी को भीख न् मिले
वहॉ पाखंडी खाते बतासे हैं
युग की इस नगरी में
घर घर होते ये तमाशे हैं
पाखंड को फूंक बिजली तुम, पवित्रता का संचार करों
सदियों की बर्बरतो को बिजली तुम बरबाद करो ।।2।।
खुन का रंग लाल फिर भी
जांत-पांत से रिश्तें जोडें
उॅच-नीच का भ्रम फैलाकर
भाई-भाई के माथे फोडे
अज्ञान-अॅधेरा मीटा बिजली, अब ज्ञान का प्रकाश धरों
सदियों की बर्बरतो को बिजली तुम बरबाद करों ।।3।।''

* IMAGE NO. 0055

(ड)

अभिलाष-अरूणा*

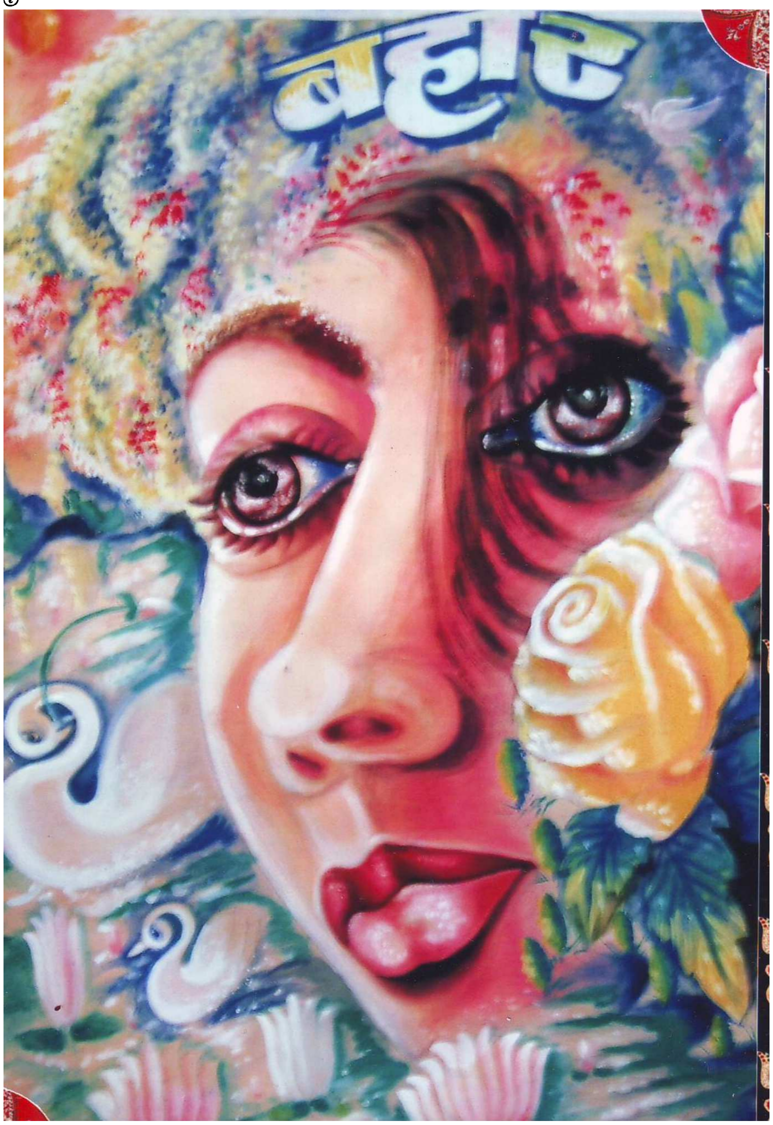
बहार

1. कलियाॅ खिल उठी*

''कलियाॅ खिल उठी
कुसुम मुस्कराये
अरूणा के आॅचल में
जिंदगी जगमगाये ।।1।।
कलियों की कोमलता ने
कामिनियों के कुंतल सॅवारे
बादलों के संग उतरी हो
सौंदूर्य की बहारे ।।2।।
कली-कली पर उड़ भ्रमर
अरूणा के गीत गाये
गीतों में मदहोश होकर
प्रीत की नई रीत बतायें ।।3।।
सुबह के संग सभी सुमन
सुंदरता की सुरभि लाये
नदी, नाले, बन, खेतो में
उमंग उल्हास की लहर छाये ।।4।।
पुष्पों को देख कोई प्रियतम
प्रभात में पहला गीत गाये
शांत सुंदर किसी सवेरे

* IMAGE NO. 0015

पहली प्रीत मिलने आयें ।।5।।
अरूण को बाहों में भरती अरूणिमा
प्रेम, सौंदर्य की है यह प्रियतमा
युग युग के इस मीत की
पवित्र है महिमा ।।6।।''

2. जगमगाकर जागे जिंदगी*

''जगमगाकर जागे जिंदगी
लहलहाकर छाये बंदगी
ओढ़नी ओढ़कर ओजस्विता की
अरूणा करें दिलों से दिल्लगी ।।1।।
जिंदगी जीवित हो जाय
उषा की संजिवनी किरणों से
नींद की मृत्यु भाग जाग
प्रभात की फरिश्ती आने से ।।2।।
निशा के अँधेरे ऑचल में धरती
बड़ी बेला तक बेहोश रहती हैं
उषा के स्वर्णिम साज से पृथ्वी
नित्य, नवजीवन पाती हैं ।।3।।
दिलों दिमाग की दुखद् दास्तान
सुख में प्रभा परिवर्तित करती है
अमंगल अज्ञान के अंत करने
अस्त्र बनकर अरूणा अवतरती है ।।4।।
सुबह के स्वर्गीय स्वरों में वह
गीत संगीत की मेहफिल सॅजाती है
गायक वादक बनकर उषा,

* IMAGE NO. 0025

नित जिंदगी जगाने आती है ।।5।।
स्वर्णिम स्वरों के सुरताल में
झूमने लगते पृथ्वी के तन मन
अरूणा के ऑचल से लहरॉता
संजीवनी सा नवचेतन ।।6।।"

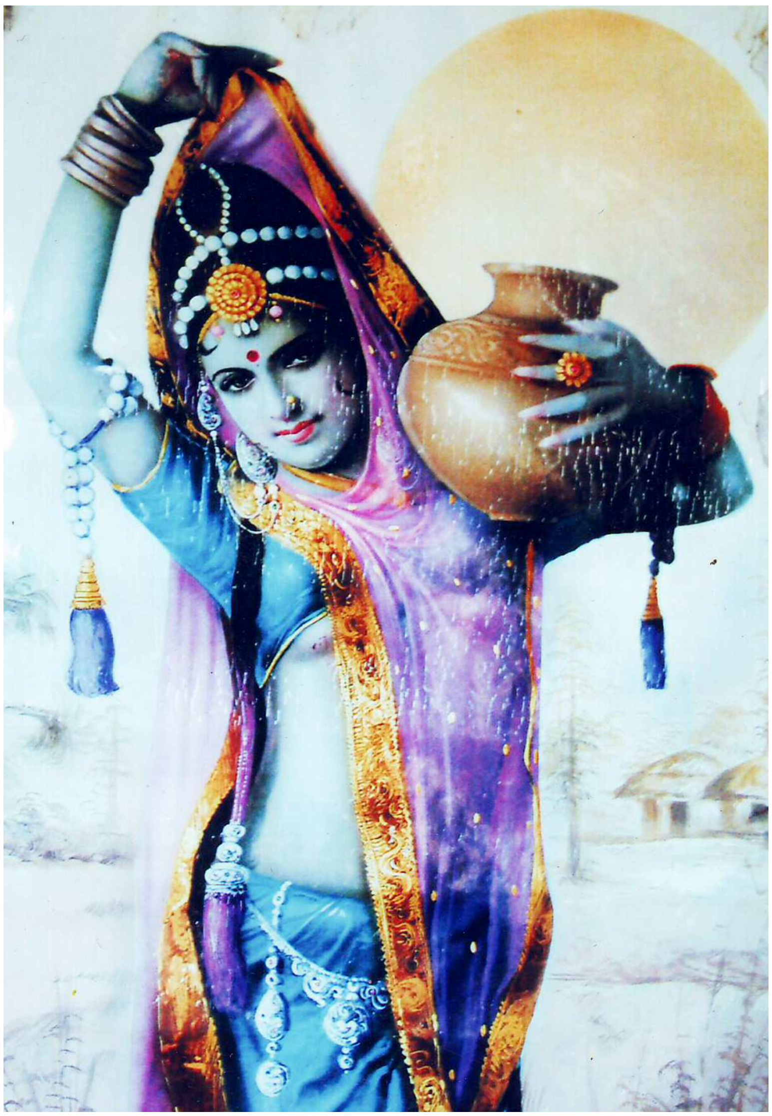

3. प्रभात की पनिहारन*

''प्रभात की पनिहारन
जब पहुँचे पनघट पर
सर से सरकती ओढ़नी
तब रह न् पाये चेहरे पर ।
कर में थमी जल की मटकी
उर में जमी बाते भूली भटकी
सीने से लगाये जीवन की धारा
उमडने को उत्सुक हैं, ऑखों में अटकी ।।1।।
पानी से भीगते वसन में
खिला हो जैसे जल में सुमन
रूप लावण्य की सुरभि में
महका हो जैसे सारा तन मन ।।2।।
आभुषणों को ओढ़ कर
पनिहारन कहॉ खोई है ?
सॅज-धॅजकर सुबह आकर भी
जागती ऑखें अभी सोई हैं ।।3।।
नीले सॉवले वर्ण की सुंदरता
तब जल आकाश को संग लाती
जब पृथ्वी पर पैर रख वनकन्या

* IMAGE NO. 0035

झोपड़ी से निकल झरने पर आती ।।4।।
पनघट पर प्रभात की ये प्रीत
युगों युगों की जन रीत बताती हैं
इसलिये आज की भी अंजान पनिहारन
इसी प्रीत रीत से, मीत बन जाती है ।।5।।"

4. गॉव की ग्वालन*

''सुबह श्याम की बेला में
दुध बेचे गॉव की ग्वालन
दही-छाछ का स्वाद खिलाते
करती रहती दुग्ध पालन ।
कभी गली-गली तो कभी ध्यान गढ़ी
ग्वालन कामों में खोती जाय
पशुओं संग समय बिताती
स्नेह के बीज बोती जाय ।।1।।
सच्चे गॉव की सच्ची ग्वालन
अपना पराया भेद न माने
आवाज देकर घर ऑगन में
मनुष्यता को ही पहचाने ।।2।।
कभी बरामदे और बादशाही ऑगन में
गोरस दे गॉव की ग्वालन
एक जगह डेरा डाल
फूल पिरोये जैसे मालन ।।3।।
गॉव की एक गॅवार ग्वालन
लाख पते की बातें जाने
मनों मनों को जोड़ने

* IMAGE NO. 0026

गाती जाये सभ्यता के गाने ।।4।।

सुबह-संध्या की सादगी लिये

संस्कृति ग्वालन में उतरती हैं

गोधुली के गमन-आगमन में

गॉव की ग्वालन आकर गाती हैं ।।5।।''

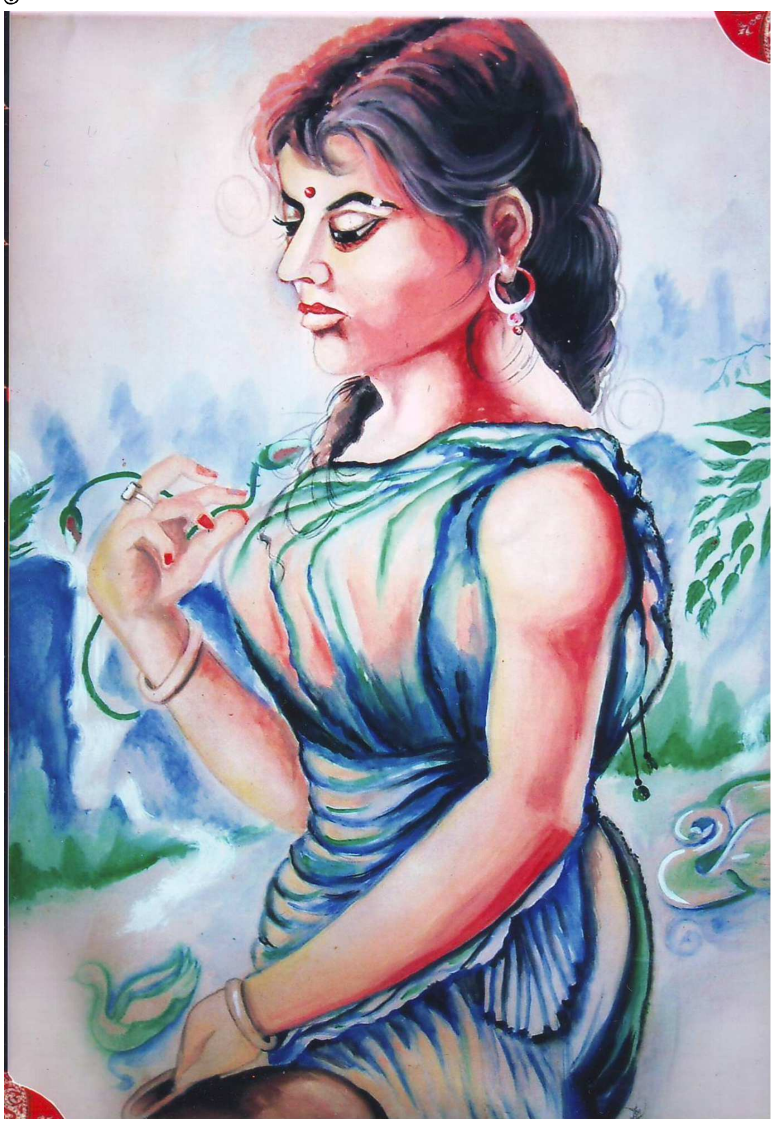

5. सद्यःस्नाता, बने सरिता*

''सद्यःस्नाता
बने सरिता
रूपहला यौवन,
जब नीर में नहाता ।
गीले वसन तन के
लिपटे हैं मीत बन के
हाथों में ले कुसुम कली
ऑखों में है सपने साजन के
महके चमन में भीगा बदन
गालों पर सुरभि खिलाता ।।1।।
गीला रूप गोरी का
मिलन हो गगन धरा का
मीट्टी को नहलाकर बना हो
गीत पहला सावन का
पहाड़ी प्रभात और कोहरे ताज में
कामिनी का रूप लुभाता ।।2।।
पहाड़, पंछी, प्रीत, पानी
कहते है जीवन की कहानी
जल बूँदों के सॉज संग में

* IMAGE NO. 0009

उमड़ती है सौंदर्य वाणी
दूर दिशाओं की इस दमयंति का
सौंदर्य सरिता में समाता ।।3।।"

6. अरूणा के गीत, बनते जीवन संगीत*

‘‘अरूणा के गीत
बनते जीवन संगीत
प्रभात की ये प्रीत
बनती मनों की मीत ।
सुनहरे रंगों के संग
अरूणिमा महफिल सजाती
रूपसी रश्मियों के साथ
कणों-मनों में चैतन्य जगाती
प्रभा के ये पावन पल
प्रकृति में फहरॉये ऑचल प्रीत ।।1।।
उर्वशी उषा के गीत
सदियों से सृष्टि में गुंजते
जन-जन का जीवनराग बनाके
जीजिविषा जजबातों को ढुंढ़ते
अरूणिमा की लालिमा में, वह
बहरॉती आये जीवन रीत ।।2।।
सुबह का स्वर्णिम समय
तब अनदेखी स्वर्णिम संपदा लाये
जब, अमर गीतों का तार छेडते

* IMAGE NO. 0002

मनमाहिनी अरूणा अवनी पर आये
दो घड़ी का यह दीव्य दर्शन
दुसरे ही पल जाता है बीत ।।3।।''

7. नीर ही जाने पीर*

''नयनों के नीर में, पावनता समाई है,
ऑसुओं की बूंद में, प्रेम पीर घुलाई हैं ।
तन मन जब थक जाये
हम सफर से ही हार जाये
ऑखों का तब निर्मल जल
देवता बनकर जीत दिलायें
पानी के इन कतरों ने, नई जिंदगियॉ दिलाई है
नयनों के नीर में पावनता समाई हैं ।।1।।
वेदनाओं से विव्हल होकर
करूण आसुओं के बादल छॉते
प्रेम के संग प्रीत कराके
खुशियों के ऑसु निकल आते
सच्चे ऑसुओं ने ही दिल की, अक्सर दास्तॉ सुनाई है
नयनों के नीर में पावनता समाई हैं ।।2।।
सूनापन ऑखे सुनाती
महफिल को ऑखें सॅजाती
सुख-दुख की ऑख मिचौली में
अपनों के लिए ऑखे बिछाती
खुदा ने भी अपनी पहचान, तमाम ऑखों से ही कराई है,
नयनों के नीर में, पावनता समाई हैं ।।3।।''

* IMAGE NO. 0042

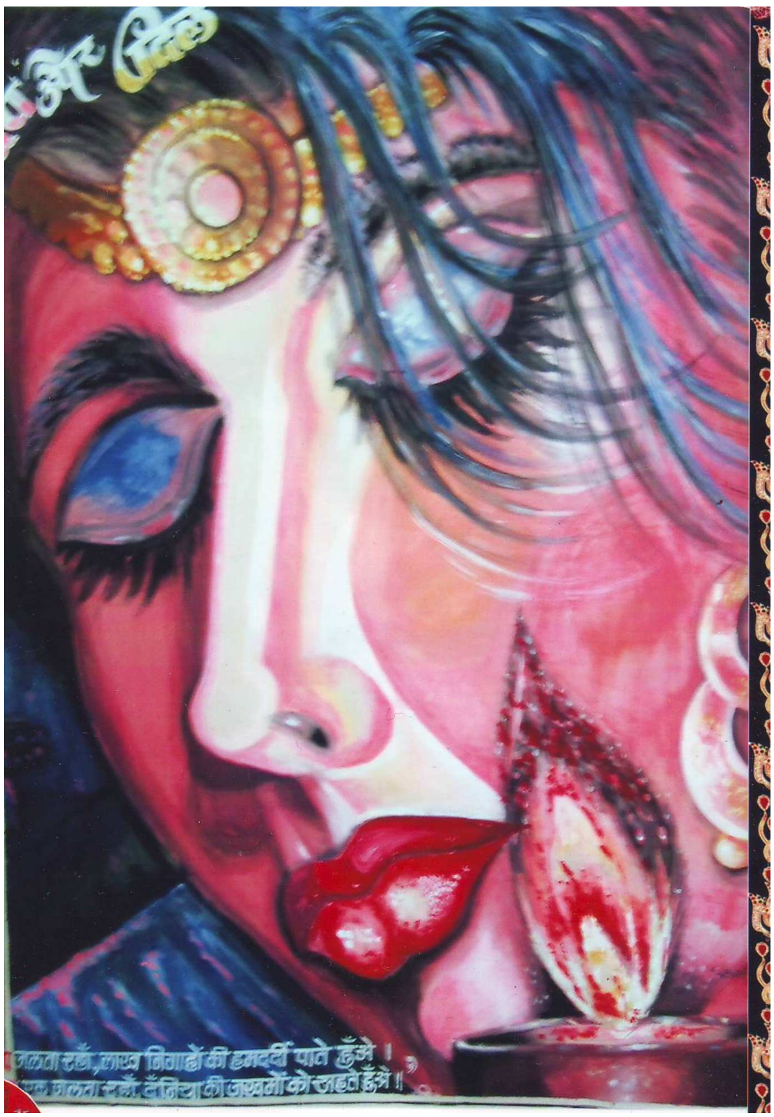
जलता रहा, लाख निगाहों की हमदर्दी पाते हुये ।
जलता रहा, दुनिया की जख्मों को सहते हुये ॥

8. दीप जले, दिल ढ़ले*

''दीप जले दिल ढ़ले रातों की गहराई में
एक उदास प्रीत खिले, प्रियतम की तनहाई में ।
दिन का ढ़लना, दिये का जलना,
कसक दिल की बढ़ाता है
खोई सांझ में सोया सूरज
मन को कही डूबोता है
सूने मन का बेचैन पंछी, चीर जाता है यादों में
दीप जले दिल ढ़ले रातों की गहराई में ।।1।।
क्या खता ? क्या खबर ?
कह ना पाई अंजान नज़र
जब टूटा था ख्वॉब सुनहरा
किस ने दिखाई ये डगर ?
रास्ता पाकर भी गुमराह हुए हम इश्क की राहों में
दीप जले दिल ढ़ले रात की गहराई में ।।2।।
पहला प्यार प्रियतम का
चाहे भी तो भूला नही पाते
अरमानों का उजड़ा चमन
लाख दिदावर खिला नही पाते
सावन जिंदगी का उजड़ने से, अब जी रहे है पतझड़ में
दीप जले दिल ढ़ले रात की गहराई में ।।3।।

* IMAGE NO. 0016

यामिनी
“यौवन और यादें, यामिनी संग झिलमिलायें।
सितारों की सहेली में, चाहत चाँद सी जगमगायें।।”
‘सावन’ 2006

9. नचाये नयनों में, नश्वरता निशा*

''नचाये नयनों में नश्वरता निशा
जगाये जुल्फों से, जीने की आशा ।
किये गयें अहसानों को
कभी कभी कोई भुल जाते हैं
रात के रूप रंग में
जीने के नये ढंग, याद आते हैं
खुलाये राज, दर्पण दिखाये
जीने की दिशा
नचाये नयनों में नश्वरता निशा ।।1।।
जोर जुल्मों के जश्न मनातें
अज्ञान, आतंक आगे बढ़े
सौ साल पर घमंड करके
बरबाद हो, कुछ कारवॉ लडे
सूनाये रजनी इतिहास, कहे कहानियों की निराशा
नचाये नयनों में नश्वरता निशा ।।2।।
आज भी पल की खबर नहीं
और दुनिया मुट्ठी में करने कुछ निकले
रूप रंग की पाखंड प्राप्ति में

* IMAGE NO. 0024

इमान जमीर बेचने कुछ निकले
कराये यामिनी अंतर्मुख, खिले सद्‌विचारों की उषा
नचाये नयनों में नश्वरता निशा ।।3।।"

10. लमहा-लमहा तरसकर प्यार में*

''लमहा-लमहा तरसकर, प्यार में जीतें रहे
तनहा तनहा घुंटकर प्रीत में तडपतें रहें ।
प्रीत में पतंगे का जल मरना ही
चाहत की ये पहचान नही
पलभर के मरण से ही
प्रेम पीड़ा का अंत नही
प्रेम में किसी शमा के, जीवन भर हम जलते रहे
लमहा लमहा तरसकर, प्यार में जीते रहें ।।1।।
जल से बिछड प्राण गंवॉना
मीन की सच्ची मोहब्बत नही
प्रिय बिन क्षणभर रह न पाना
प्रेम की यह कसौटी नहीं
पास होकर भी प्रियतमा के, जीवनभर हम बिछडते रहें
लमहा लमहा तरसकर, प्यार में जीते रहें ।।2।।
धरा आकाश में चमकती बिजली,
प्रेम पीड़ा का पात्र बनती
एक क्षण में टूटकर
उसी पल जिंदगी नष्ट करती
विरह की विद्युलता टुटने पर भी, हम सावन बन बरसते रहे
लमहा लमहा तरसकर, प्यार में जीते रहें ।।3।।''

* IMAGE NO. 0041

(इ)
चाँद चकोरी*

1. चॉद को चाहे चकोर*

''दूर गगन पर प्राण बिछाये, चंद्र को चाहे चकोर
वसुंधरा पर नित व्याकुल वह होये जैसे बन का मोर ।
अप्राप्य प्रेम की आराधना में
कई सदियॉ बीत गई
प्रेम उतर कभी धरा नही आया
पर चकोर की चाहत गगन छुई
चॉद-चकोर की बंधी हुई हैं, आज भी अमर प्रीत की डोर
दूर गगन पर चॉद बिछाये चंद्र को चाहे चकोर ।।1।।
अज्ञात प्रियतम की अभिलाषा में
अंतकरण चकोर का जलता रहा
तील-तील बन तडफ़कर भी
दर्द दिल का वह सहता रहा
विरही चातक वेदना ही चुगे, चाहे रात हो या भोर
दूर गगन पर प्राण बिछाये, चंद्र को चाहे चकोर ।।2।।
प्रेम पीर को चातक पाले
विरह वेदना के ऑसु ढो ले
अकसर ऑसुओं की आग में जलते
मौन मन में मीत बोले
चातक की चाहत से जुडे है, अवनी अम्बर के प्रेम छोर
दूर गगन पर प्राण बिछाये, चंद्र को चाहे चकोर ।।3।।''

* IMAGE NO. 0043

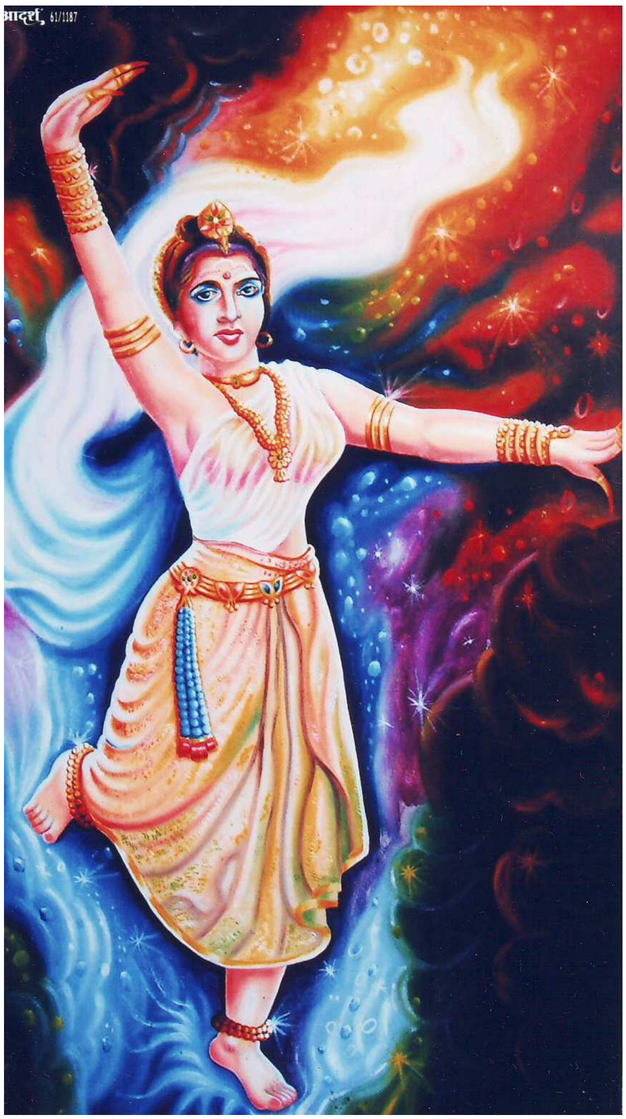
आदर्श, 61/1187

2. नाचे नभ की नृत्यांबरी*

''सौंदर्य का सॉज सॅजाकर, नाचे नभ की नृत्यांबरी
मन के मधूर सुरसंगीत पर गाये, कोई स्वप्नसुंदरी ।
कंठ में भरकर अमर वाणी
प्रेम में खोई यह दिवानी
रंगरूप के लावण्य में
कहे जीवन की दीव्य कहानी
प्रेमपथ पर निकल पड़ी है, बनकर यह बावरी
सौंदर्य का सॉज सॅजाकर, नाचे नभ की नृत्यांबरी ।।1।।
अम्बर की यह अमृत लता
मर्त्य लोक में सरसाई हैं
सौंदर्य के पुष्प खिलाकर
सत्य, शालिनता दिखलाई हैं
मानवता के तरू से लिपटने, आई है यह वल्लरी
सौंदर्य का सॉज सॅजाकर, नाचे नभ की नृत्यांबरी ।।2।।
सृष्ठि को साजन बनाये
स्नेह सुधा बिखराने आई
मंगलता के मधूर गीतों से
मन के तार झंकारने आई
व्याकुल इस विश्व में, बज उठी यह बॉसुरी
सौंदर्य का सॉज सॅजाकर, नाचे नभ की नृत्यांबरी ।।3।।''

* IMAGE NO. 0029

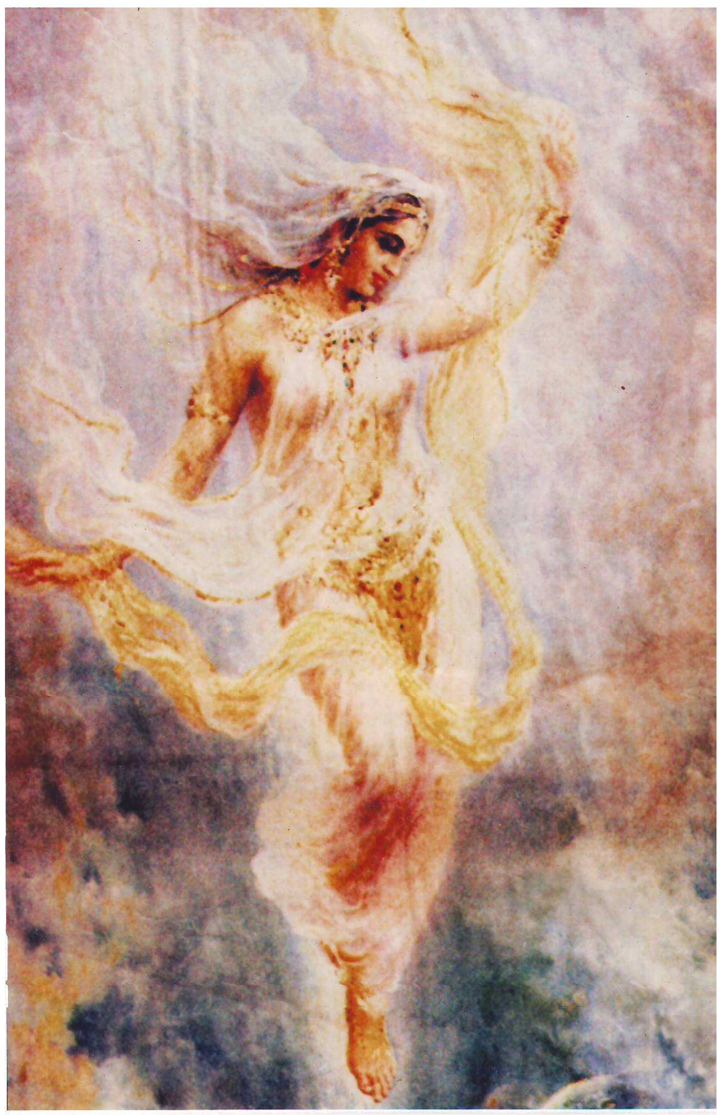

3. उतरे उर में उर्वशी*

''उतरे उर में उर्वशी स्वर्ग से अवनि आते हुए
धडकें दिल धरा का अम्बरी को पाते हुए ।
अमर लोक की कोई अप्सरा
मरण मैदान चली आई
जनम-मरण का सत्य समझने
मृत्यु लोक वरने आई
मृत्यु महिमा ने मोह लिया, इस जीवनी को जीते हुए
उतरे उर में उर्वशी स्वर्ग से अवनि आते हुए ।।1।।
जब सौंदर्य के इस स्नेह संसार ने
पृथ्वी पर पहले पैर रखे
तब प्रेम सुधा की इस प्रतिमा से
मरूभूमि में मधुबन देखे
सृष्ठि ही बन जाये, स्वर्ग इस मंदाकिनी के मुस्काते हुए
उतरे उर में उर्वशी स्वर्ग अवनी आते हुए ।।2।।
प्रकृति के प्रत्येक रूपों ने
शाश्वत सत्यों के दर्शन दिये
जनम मरण के इन मेलों ने
सुख दुख को नजराने दिये
मंत्रमुग्ध कराये मेनका, स्वर्गिय सौगाते लाते हुए
उतरे उर में उर्वशी स्वर्ग अवनी आते हुए ।।3।।''

* IMAGE NO. 0037

'अंबरी'
"निल लोककी निलॅंबरी, नभ की निलाई अब न्यौछावरो ।
धरती के दमन मे तुम, सुख समृद्धि की बरसात करो ॥"
'सावन'

4. निलाम्बरी ! नभ की निलाई न्यौछावरों*

''निल लोक की निलाम्बरी, नभ की निलाई अब न्यौछावरों
धरती के दामन में तुम, सुख शांति की बरसात करों ।
प्यासी ऑखों से तुम्हें
पीड़ित पृथ्वी, पल पल पुकारे
विश्ववेदना लिये उर में
व्याकुल होकर तुम्हें निहारे
खुन से लथपथ इन स्वजनों में, निलाम्बरी नवआलोक भरों
निल लोक की निलाम्बरी, नभ की निलाई अब न्यौछावरों ।।1।।
पालपोस, जिन्हें पुष्ठ किये
उन पुत्रों ने ही कष्ठ दिये,
जमीन को जननी समझकर भी
बड़ी बेरहमी से घॉव किये
जनम से दुखियारी, इस जननी के, गहरे तुम अब घॉव भरों
निल लोक की निलाम्बरी, नभ की निलाई अब न्यौछावरों ।।2।।
चीर कलेजे चराचरों ने
अवनि को आहत किया
बेच, टूकडे वहशियों को
मॉ का भी व्यापार किया

* IMAGE NO. 0021

ममता को भी मूल्य से बेचते, मूर्खों पर तुम अब वार करों
निल लोक की निलाम्बरी,
नभ की निलाई अब न्यौछावरों ।।3।।''

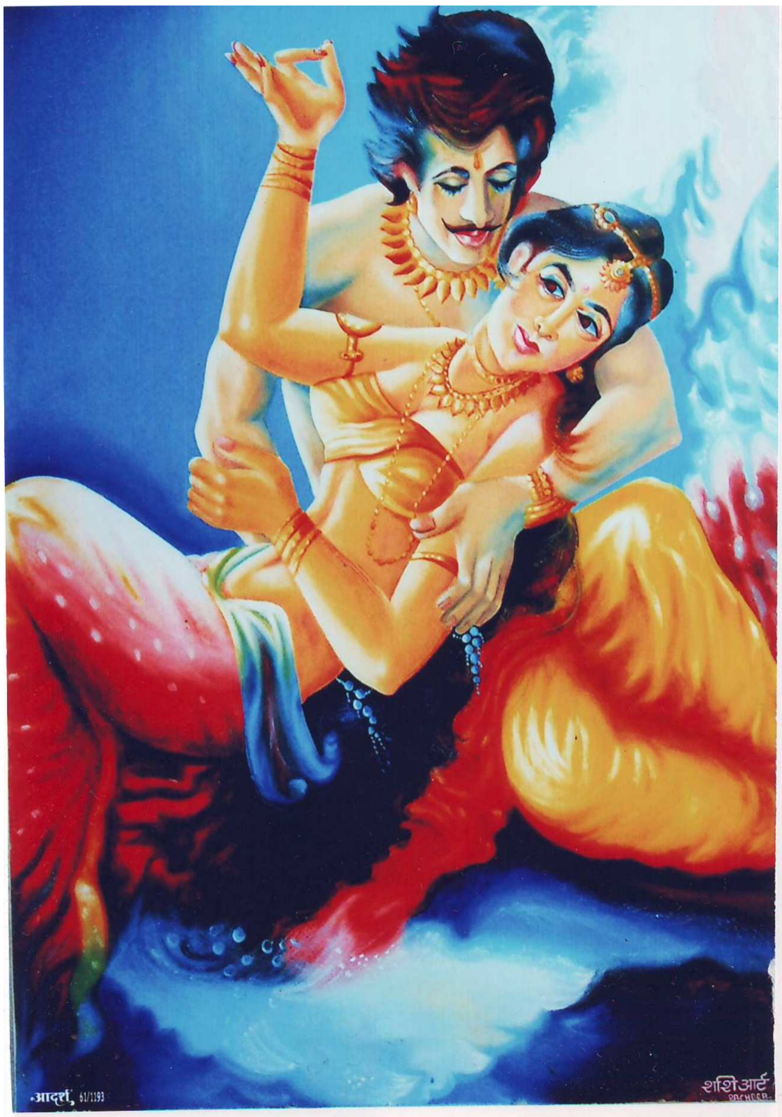
आदर्श, 61/1193
शशिआर्ट

5. सागर सरिता*

''धरती के दामन से बँधे है दोनों भी परिणिता
सजनी साजन बनकर मिले हैं, सागर और सरिता ।
जलजीवन की कथा पुरानी
चारोओर है पानी ही पानी
पानी के ही परम प्रीत में
दुनिया हुई बड़ी दिवानी
जनम मरण को जल उद्धारे, जल ही हैं फरिश्ता
धरती के दामन से बँधे है दोनों भी परिणिता ।।1।।
नदी में है, प्रियतमा नारी
जो सागर से मिलने भूली दुनिया दारी
कर्तव्य पथ पर नित आगे बढ़कर
प्रेम लगन में बनी वह प्यारी
सागर अलिंगन में समाई है सरिता-जीवन की धन्यता
धरती के दामन से बँधे है दोनों भी परिणिता ।।2।।
सरिता ने प्रेमबीज बोये
सागर भी सपनों में सोए
जनजीवन की प्यास बुझाते
दोनों भी प्यासी ऑखों में खोये
जनजीवन का उद्धार ही हैं सागर सरिता की सहधर्मिता
धरती के दामन से बँधे है दोनों भी परिणिता ।।3।।''

* IMAGE NO. 0031

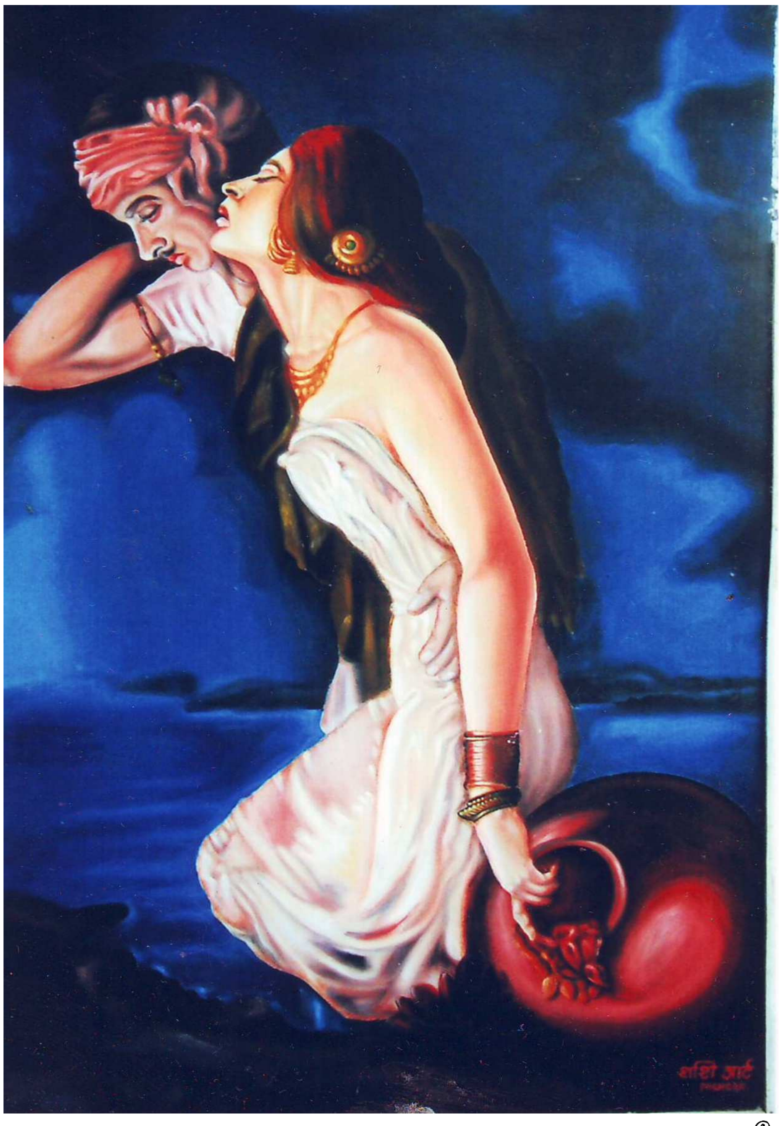

6. ढ़ाई अक्षर प्रेम के...*

''लिखने वाले ने लिखे हैं, ढ़ाई अक्षर प्रेम के
दिलों ने पढ़े हैं दिल से, ढ़ाई अक्षर प्रेम के ।
प्रेम लगन में लीन होकर
दिवानों ने प्रेमपाठ पढ़े
कफन बॉधकर सर से वे
अज्ञान से आजन्म लढ़े
प्रेम इतिहास लिखे गये हैं, बहादूरी और बलिदान के
लिखने वाले ने लिखे हैं, ढ़ाई अक्षर प्रेम के ।।1।।
प्रेम को ही पूजा मानकर
दिल में देवता के दिदार किए
मंदिर मस्जीद गुरूद्वारा छोड़,
प्राण दिलबर पर ही अर्पण किये
प्रेम तपस्या सिद्ध कराने, प्याले पीये है विष के
लिखने वाले ने लिखे हैं, ढ़ाई अक्षर प्रेम के ।।2।।
दो जिस्म पर एक रूह से
मन मंदिर को पूॅजते रहे
उच्च नीच का भेद भुलाकर, प्रेम लोक में खोते रहें
कई जीवनियॉ अमर हुई है, रंग में इस प्रेम के
लिखने वाले ने लिखे हैं, ढ़ाई अक्षर प्रेम के ।।3।।''

* IMAGE NO. 0032

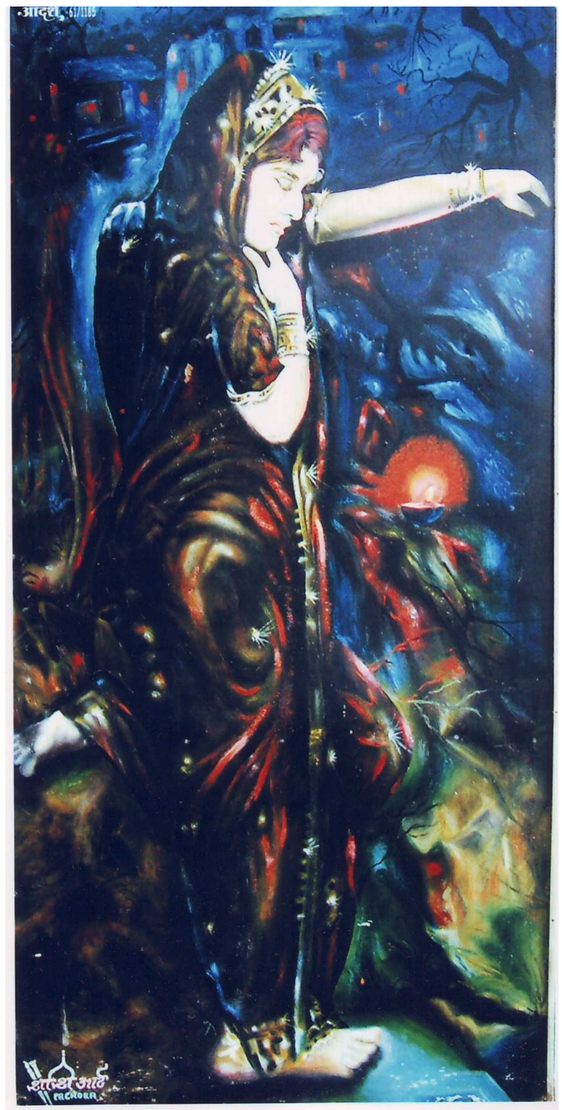
आदर्श 61/1185
PACHORA

7. दिया जले मज़ार पर*

''दिया जले मजार पर रात होते होते
जिया जले यादों में ऑसू ढोते ढोते ।
गमगीन जिंदगी के अँधेरे
साथी कोई छोड गया
लूॅटा कर खुशियॉ तमाम
गमों की सौगात दे गया
निकलते हैं अब ऑसु
दास्तॉ कहते कहते
दिया जले मजार पर रात होते होते ।।1।।
बरसते ऑसुओं की धारा में
दर्द गहरा हो गया
अश्कों के इस सावन में
दुख हरियाली बन गया
जख़्मी दिल पुकारे अब कोयल बनते बनते
दिया जले मज़ार पर रात होते होते ।।2।।
दिल में दर्द का तुफॉ लिये
जलाते है मोहब्बत के दिए
संगदिल बिना कैसे

* IMAGE NO. 0036

कोई कैसे गम के ऑसु पीये ?
कई कयामतें आती है, मातम मनाते मनाते
दिया जले मजार पर रात होते होते ।।3।।''

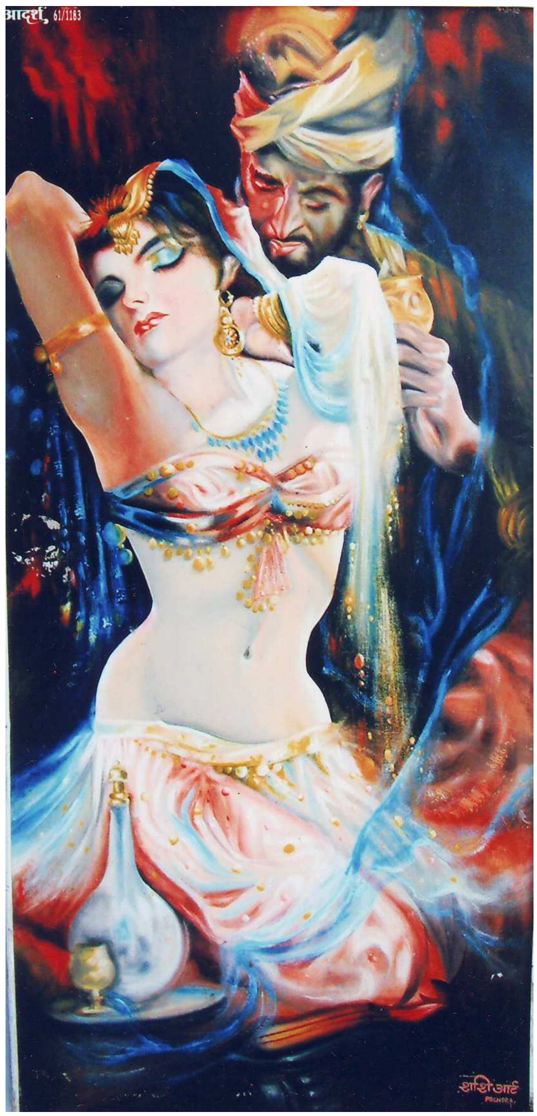
आदर्श, 61/1183
शशी आर्ट

8. साक़ी शबाब-शराब*

''साक़ी शबाब शराब से दिगी रंगीन हो गई
अब क्या खबर किसी की, जब जिंदगी जन्नत बन गई ।
साक़ी के हाथों का प्याला
पिता ही जाय, पीने वाला
सोमरस कहो इसे
या कहों मदमाती हाला
सोमरस के एक पान से, खुशियॉ तमाम मिल गई
साक़ी शबाब शराब से दिगी रंगीन हो गई ।।1।।
मधुबाला के एक जाम से
मरकर भी जी उठे
जीने के लिए तरसते रहें
पर पलभर में अब जी उठें
मुर्दा इस जिस्म में अब रूह नई भर गई
साक़ी शबाब शराब से जिंदगी रंगीन हो गई ।।2।।
साक़ी शबाब शराब से जिंदगी रंगीन हो गई
साक़ी ! पिलाओं प्यालों पर प्याले
भूल जाये हम गम मतवाले
बेरहम दुनियॉ अब कहेगी क्या ?

* IMAGE NO. 0034

चिराग चुराकर तो उसने किये उजालें
ॲधेरी जिंदगी में अब, सच्ची शमा जल गई
साक़ी शबाब शराब से दिगी रंगीन हो गई ।।3।।"

9. यामिनी यौवन, कतराये मन*

''यामिनी यौवन में घिरकर, मन कतराता जाये
दिल की बाते होठों तक आकर, कही नहीं जाये ।
रूको जरा दो पहर ठहरों
गौर से मैं देख लू
प्रेम के इस भीगे पल को
दिल की धड़कन से जोड लू
कब तक यह बेताब दिल अब प्रियतम की आस लगाये ?
यामिनी यौवन में घिरकर मन कतराता जाये ।।1।।
पता नही हैं तुम्हें शायद
जिंदगी तुम बन गई हो
दिल की हर सासों में भर कर
रूह मेरी बन गई हो
तेरे कदमों में बिछाये है प्राण, अब चाहे तु जिलाये या मराये ?
यामिनी यौवन में घिरकर, मन कतराता जाये ।।2।।
गवाह है ये जलती शाम
दिये से बुॅझकर उठता धुवॉ
प्रेम अंगन को बढ़ाती हुई
गवाह है ये मदहोश हवा
इस अॅधेरे जहॉ में चॉदनी बनकर, प्रियतम तूम जगमगाये
यामिनी यौवन में घिसकर मन कतराता जाये ।।3।।''

* IMAGE NO. 0033

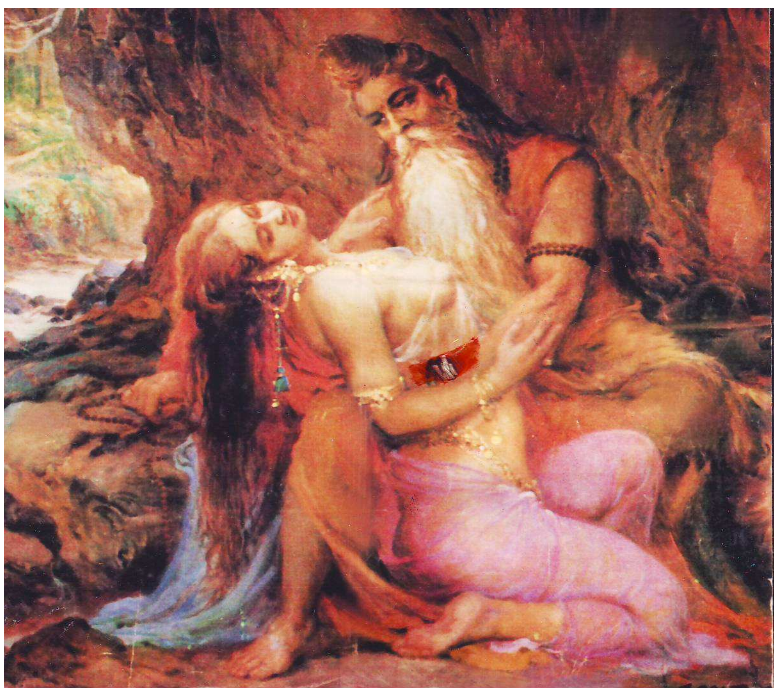

10. रहस्य रचें रजनी, बनकर सजनी*

''ऑचल में अवनी सुलाये, रजनी रहस्य रचाती
ऑखों में काजल लगाये, सजनी बन लुभाती ।
रंगो का मोह त्याग रजनी
औरो के रंग दिखाये
सुख दुख की अजिब स्थितियॉ
श्यामल पट में समायें
जन जीवन की तसवीरों में वह रंग नये भराती
ऑचल में अवनी सुलाये, रजनी रहस्य रचाती ।।1।।
मोह माया के जाल में, रजनी
राहगीरों को भूलाये
ज्ञानी पंडीत तपस्वी भी
इससे भ्रमित हो जाये
कभी मेनका बन साधु की, वह तपस्या भंग कराती
ऑचल में अवनी सुलाये रजनी रहस्य रचाती ।।2।।
कई प्रेम पथिकों ने अब तक
निशा से प्रेमपत्र पढ़े
निकल रजनी रहस्यों से बाहर
विरले ही आगे बढ़े
कभी दमयंति बन दामन से, वह राजा-रंक बंधाती
ऑचल में अवनी सुलाये रजनी रहस्य रचाती ।।3।।''

* IMAGE NO. 0038

चाँद चकोरी
"दूर गगन पर प्राण बिछाये चाँद को चाहे चकोरी
वसुंधरा पर नित् व्याकुल होवे, जैसे

परिचय - Bio Data*

- **प्रो.डॉ.शशिकांत 'सावन'**
- जन्मदाता - श्रद्धेय आयु.विमल तथा यशवंत सोनवणे
- जन्मतिथि - 25 जनवरी 1969
- जन्मस्थल - बाभुलगॉव जनपद, तहसिल धरणगॉव (खान्देश) महाराष्ट्र
- शिक्षा - एम.ए., पीएच्.डी.(हिंदी भाषा एवं साहित्य), एम.एड्. (शिक्षाशास्त्र), राष्ट्रभाषा पंडित, राष्ट्रभाषा पद्म, राष्ट्रभाषा आचार्य (भारत में प्रथम स्थान) डी.लिट (रजि.)
- अभिरूचि - चित्रकारिता, अभिनय, संगीत, काव्य, लोककला एवं शिल्पकला के क्षेत्रों में कार्य
- प्रकाशन -

1) अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर 60 शोध आलेख प्रकाशित
2) लोकसाहित्य, लोकसंस्कृतियॉं, दलित साहित्य, भारतीय आदिम लोकसाहित्य भारतीय स्त्री साहित्य नामक 5 शोध ग्रंथ तथा 'अत्त दीप भव' नामक मराठी काव्य संग्रह प्रकाशित
3) वैश्विक बौद्ध साहित्य, शतकीय हिंदी सिनेमा और साहित्य (प्रेस में)

- शोधकार्य -

1) यू.जी.सी., नई दिल्ली की एक बृहृत तथा दो लघु शोध परियोजनाओं पर शोधकार्य
2) आई.आई.ए.एस., शिमला (हिमाचल प्रदेश) में एक शोध परियोजना पर कार्य शुरू
3) कलाओं के करिश्माई किरदार, शायरी के संग, गालिब और गज़ल विषयों पर शोधकार्य

- सम्मान -

1) राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर 'साहित्य कला संस्कृति एवं शोध' के क्षेत्र में 10 पुरस्कारों से सम्मानित

* IMAGE NO. 0001

2) अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संमेलनों में हिंदी, लोक, बौद्ध तथा भारतीय साहित्य-संस्कृतियों पर व्याख्यान

♦ संपर्क - स.प्राध्यापक एवं शोध निदेशक, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, प्रताप महाविद्यालय, अमलनेर - 425401, जिला जलगॉव (महाराष्ट्र) (उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगॉव से संलग्न) मोबाईल - 9423186115, 9975547142, Email – prof.saawan@gmail.com